thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 20 जुलाई 2014

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार 20 जुलाई 2014 से 26 जुलाई 2014

श्रा. कृ. 09 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 117, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. बुढ़ार में क्षेत्रीय प्राचार्य संगोष्ठी सम्पन्न

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बुढ़ार में डी.ए.वी. स्कूलस म. प्र. एवं छत्तीसगढ़ जोन की प्राचार्य संगोष्ठी क्षेत्रिय उपनिदेशक माननीय प्रशान्त कुमार जी की उपस्थिति में आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में कुल 14 प्राचार्य सम्मिलित हुए।

मुख्य होता की आसन्दी से यजमान द्वय सर्वश्री प्रशान्त कुमार जी क्षेत्रिय उपनिदेशक, एवं माननीय श्री सी.एल. सरावगी जी, चेयरमेन, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बुढ़ार, ने परम पिता परमात्मा की मन–वचन–कर्म से स्तुति करते हुए अग्निदेव को आहुति समर्पित की।

अपने उद्‌बोधन में क्षेत्रिय उपनिदेशक ने कहा कि – 'यह परम सौभाग्य है कि हम सभी प्राचार्यगण अपने संगोष्ठी सत्र का शुभारंभ पावन वैदिक यज्ञ से कर रहे हैं। परमपिता परमात्मा हमें आत्मिक एवं शारीरिक बल प्रदान करे जिससे हम सभी अपने–अपने कार्य क्षेत्र में सर्वांगीण शिक्षा के विकास को चरमोत्कर्ष तक पहुँचाने में सक्षम हो सकें।

प्राचार्या श्रीमती विजय लक्ष्मी नायडू जी ने अपने स्वागत उद्‌बोधन में सभी आर्य महानुभावों का हार्दिक अभिनन्दन किया और बताया कि इस वर्ष विद्यालय की वाणिज्य संकाय की छात्रा कु. सुनिधि बगरिया ने कक्षा 12वीं की परीक्षा में 97% अंक अर्जित कर इस विद्यालय के साथ–साथ कोयलांचन का भी नाम रोशन किया है।

संगोष्ठी जो देर शाम तक चलती रही, में परिक्षेत्र एवं विद्यालय के 2013–14 की परीक्षा परिणाम के विषय में विशद परिचर्या हुई साथ ही बच्चों की सम्यक् प्रगति एवं विकास हेतु सविस्तार विचार–विमर्श हुआ।

डी.ए.वी. बागनी के छात्रों ने निकाली शोभायात्रा

डी.ए.वी. स्कूल बागनी ने डी.ए.वी. स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया। बारिश की तेज फुहारों के बीच स्कूल के छात्र–छात्राओं ने नूरपुर के चौगान स्थित शीतला माता मंदिर से न्याजपुर तक शोभायात्रा निकाली। शोभायात्रा का शुभारंभ स्कूल के प्रबंधक प्रभात सिंह ने किया। इस मौके पर स्कूल के प्रधानाचार्य एम.आर. राणा व स्थानीय आर्य समाज के सी.पी. महाजन सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने शोभायात्रा में भाग लिया। छात्रों ने 'वेद की ज्योति जलती रहे', 'आर्य समाज अमर रहे' व 'ओ३म् का झंडा ऊंचा रहे' जैसे गगन भेदी नारे लगाए। नगर वासियों ने शोभायात्रा पर पुष्प वर्षा की। स्कूल के छात्रों द्वारा स्वामी दयानंद सहित महापुरुषों की झांकियां शोभायात्रा के मुख्य आकर्षण का केंद्र रहीं।

डी.ए.वी. विश्रामपुर (छ.ग.) में हुआ शिक्षक सशक्तिकरण

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल विश्रामपुर में आयोजित तीन दिवसीय शिक्षक सशक्तिकरण कार्यशाला का शुभारंभ एस.ई.सी.एल के महाप्रबन्धक श्री आर. के निगम एवं सहायक क्षेत्रीय निदेशक श्री एस. के राय के मार्गदर्शन एवं सहयोग से हुआ।

इस कार्यशाला में म.प्र./छतीसगढ़ जोन के विविध डी.ए.वी. विद्यालयों के 48 अध्यापक अध्यापिकाओं ने भाग लिया। इस तीन दिवसीय कार्यशाला एवं अलग–अलग सत्रों में ''तनाव प्रबंधन'', ''शिक्षक एवं छात्र का व्यक्तित्व निर्माण एवं सर्वांगीण विकास, आदर्श शिक्षा, दिशा निर्देशन'', ''बच्चों की अभिरुचि एवं विषयानुसार अपने भविष्य का गठन, नियोजन एवं तालमेल'' आदि विषयों पर प्रेरक मार्गदर्शन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महोदय श्री एच.एस. मदान ने कहा कि ऐसे आयोजन से ज्ञान, भावनात्मक सामंजस्य एवं मित्रता का उचित विकास होता है। विशिष्ट अतिथि श्री के पाण्डेय ने कहा ''शिक्षण सत्र से पूर्व इस प्रकार के आयोजन से उचित शैक्षिक परिवेश निर्मित होता है एवं शिक्षकों में शैक्षिक कौशलता का विकास होता है इस प्रकार के कार्यशालाओं का आयोजन होते रहना चाहिए। समन्वयक डॉ. किरण माथुर जी ने अपने वक्तव्य में शिक्षकों से बच्चों एवं समाज के प्रति प्रेम पूरित व्यवहार एवं सृजनात्मक दृष्टिकोण अपनाने की अपेक्षा की जिससे उनमें मानवीय मूल्यों का विकास हो।

श्रीमती नूरजहाँ खान जी ने इस अवसर पर कहा कि बच्चों की अधिकतम जिज्ञासा को शांत किया जाए एवं उनके मन मे उठने वाले नव विचारों एवं सृजनात्मकता का सम्मान किया जाए

समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री. एच. एस. मदान जी ने कहा कि यह कार्यशाला ज्ञानार्जन में पूरी तरह नई कड़ी के रूप में जुड़कर लाभकारी सिद्ध हुई है तथा बच्चों को इस का सीधा लाभ मिलेगा ।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 20 जुलाइ, 2014 से 26 जुलाई, 2014

प्रभु वर्षा की रिमझिम

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः, पवमानस्य शुष्मिणः।
चरन्ति विद्युतो दिवि।।

ऋग् ६.४१.३

ऋषिः **मेधातिथिः काण्वः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● **(शृण्वे)** सुन रहा हूँ, **(शुष्मिणः)** बलवान्, **(पवमानस्य)** पवित्रता–दायक सोम प्रभु का, **(वृष्टेः स्वनः इव)** वर्षा की रिमझिम जैसा, **(स्वनः)** नाद (हो रहा है)।, **(दिवि)** हृदयाकाश में, **(विद्युतः)** बिजलियाँ, **(चरन्ति)** चल रही हैं, चमक रही हैं।

आज मेरे आत्म–लोक में बरसात छाई है। सोम प्रभु मेघ बनकर बरस रहे हैं। साधारण मेघ भी 'पवमान' होता है, क्योंकि वह पवित्रता–दायक निर्मल जल की वर्षा करता है; फिर मेरे सोम प्रभु 'पवमान' क्यों न हों। उनमें तो वह पवित्रता–दायक आनन्द रस भरा है, जो आत्मा और मन के युग–युग से संचित पाप को धो देता है। सोम प्रभु 'शुष्मी' हैं, बलवान् हैं, बलियों के बली हैं। अतः अपनी शरण में आनेवाले को आत्मिक बल से परिपूर्ण कर देते हैं। उनसे बरसनेवाली बल की वृष्टि निर्बल को बली, असहाय को सुसहाय और उत्साह एवं जागृति से हीन को उत्साही एवं जागरूक बना देती है। आज मैं स्पष्ट रूप से अनुभव कर रहा हूँ कि शुष्मी पवमान सोम प्रभु की आनन्दमयी रिमझिम वर्षा मेरे अन्तलोक में हो रही है। वर्षा की रिमझिम में जो संगीत होता है, वैसा ही संगीत मेरी आत्मा में उठ रहा है। उस दिव्य संगीत में मैं अपनी सुधबुध खो बैठा हूँ। बल और आनन्द की रिमझिम के साथ–साथ शीतल, मन्द, सुगन्ध प्राण–पवन बहकर मेरे मानस में नवीनता और स्फूर्ति उत्पन्न कर रहा है। वर्षा होने पर जैसे भूलोक पर सर्वत्र हरियाली छा जाती है, ऐसे ही मेरा अन्तर्लोक भी सत्य, न्याय, दया, श्रद्धा आदि सद्गुणों की हरियाली से हरा–भरा हो गया है। बरसात में जैसे नदियाँ पर्वतों से नीचे मैदानों में बहने लगती हैं, ऐसे ही मेरे आत्मा के उच्च शिखरों पर बरसे हुए सोम प्रभु के दिव्य रस की नदियाँ नीचे अवतरण कर मेरे मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियों आदि को आप्लावित कर रही हैं। बरसाती आकाश में जैसे बिजलियाँ चमकती हैं, वैसे ही मेरे हृदयाकाश में आज दिव्यता की विद्युतें चमकार कर रहीं हैं। वे विद्युतें मेरे मानस को प्रकाश का सूत्र पकड़ा रही हैं। उन क्षणप्रभा विद्युतों से मैं अपने मानस में स्थायी विद्युद्–धारा को अर्जित कर रहा हूँ, जो जीवन–पर्यन्त मुझे ज्योति देती रहेगी। मैं मुग्ध हूँ प्रभु–वर्षा की रिमझिम पर, मैं मुग्ध हूँ दिव्य विद्युतों की द्युति पर। हे सोम प्रभु! ऐसी कृपा करो कि यह बरसात मेरे आत्म–लोक में सदा उमड़ती रहे, सदा मुझे दिव्य बलदायी रस और प्रकाश प्रदान करती रहे। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

दो रास्ते

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में हमने पड़ा कि 'अनुराग' शब्द बहुत महिमा वाला है। यह कभी 'श्रद्धा' बन जाता है, कभी 'प्रेम' बन जाता है, कभी 'स्नेह' बन जाता है और यही 'अनुराग' भगवान के लिए हो तो यह भक्ति बन जाता है।

इन सभी शब्दों का अर्थ तो एक ही है परन्तु 'अनुराग' मनुष्य को अध्यात्मिकता की उंचाई पर उस समय ले जाता है जब ये बेअंत हो। जिसके मन में यह उत्पन्न हो जाता है वह स्वामी रामतीर्थ की तरह सब कुछ छोड़ कर बैठ जाता है, लोग उसे पागल कहते हैं। स्वामी जी ने अनेक उदाहरण देकर अपनी इस बात को स्पष्ट किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर की घटना सुनाते हुए उन्होंने कहा कि मृत्यु समीप आने पर एक ऐसी स्थिति आ जाती है कि स्वयं टैगोर जैसा सफल महाकवि आंखों में आंसु भरकर कहने लगता है कि अब मैं कुछ कहने के योग्य हुआ तो मेरी मृत्यु का समय आ गया।

स्वामी जी ने गंगोत्री में बैठकर 'प्रभुदर्शन' नामक पुस्तक लिखी उसमें यही बात कही कि भक्त जब ध्यान में बैठता है तो प्रभु का दर्शन करता है और उस स्थिति का वर्णन कोई नहीं कर सकता लेकिन आज तो मनुष्य प्यार भी स्वार्थ से करते हैं तो उनमें व्यक्ति को 'सोम' बना देने वाला कहां से पैदा हो।

अब आगे......

तीसरा दिन

पूज्य स्वामी जी ने लम्बे स्वर में 'श्रो३म्' का उच्चारण करने के बाद कहा–

मेरी प्यारी माताओ और सज्जनो!

"सोमम् अनु आरभामहे"

यह सामवेद कहता है। आओ, हम सोम से अपना जीवन आरम्भ करें, अपने जीवन में 'सौम्यता' भर लें। कल और परसों भी यह बात मैंने कही। यह भी कहा कि सौम्यता का अर्थ है नम्रता, सरलता, मधुरता, मीठी वाणी, पवित्र व्यवहार और प्रेमा–भक्ति। यह सब बताते हुए मैंने उन लोगों का भी वर्णन किया, जो कहते हैं कि यह सरलता, नम्रता या त्याग का युग नहीं; ये बीते युग की बातें हैं। आजकल तो अकड़ का, चौधरीपन का, दूसरों पर शासन का, उनपर अधिकार करने का युग है, धन–दौलत कमाने का युग है, दौलत को एकत्र करने का युग है, चाहे उसके लिए ब्लैकमार्केट का मार्ग अपनाना पड़े अथवा स्मगलिंग का, रिश्वतखोरी का, चोरी का, देश से गद्दारी का, लोगों को धोखा देने का, डाका डालने का और ठगी का।

यह कहती है दुनिया! और साथ ही यह भी कहती है कि आनन्द–स्वामी ने क्या असमय की रागिनी छेड़ रखी है! यह तो दूसरा जमाना है, दूसरा युग।

मैं जानता हूं, भाई कि हर बात अपने समय पर ठीक होती है। राग–रागिनी भी वक्त के हों तो अच्छे लगते हैं। आजकल गर्मी की ऋतु है; यदि आप यहाँ गर्म कोट पहनकर और ऊपर कम्बल ओढ़कर आ जाते तो आपका क्या हाल होता? और सर्दियों में रात के समय कथा होती हो, पानी बरसता हो, तेज बर्फ़ानी हवा चलती हो और आप मलमल का कुर्ता पहनकर यहाँ आयें तो फिर जो परिणाम होगा वह तो आप भी जानते हैं, मैं भी जानता हूँ। यह बिलकुल ठीक है कि हर बात अपने वक्त पर ठीक होती है। गर्म कपड़े सर्दी के दिनों में ही ठीक हैं, सर्द कपड़े गर्मी के दिनों में ही।

परन्तु मेरे भाई! वेद का ज्ञान तो किसी एक युग या काल के लिए नहीं, किसी एक देश या समाज के लिए नहीं। वेद का ज्ञान तो हर युग, हर काल, हर देश, हर समाज के लिए है। सतयुग, त्रेता या द्वापर के लिए ही नहीं, कलियुग के लिए भी है; केवल भारत के लिए नहीं, हर देश के लिए है; केवल आर्यसमाज के लिए नहीं, हर उस समाज के लिए है जो मनुष्यों पर आधारित है।

वेद यदि कहता है कि–

"सोमम् अनु आरभामहे।"

"आओ, सोम से अपने जीवन को आरम्भ कर, अपने जीवन में 'सौम्यता' भर लें" तो केवल सतयुग, त्रेता या द्वापर के लिए नहीं कहता, कलियुग के लिए भी कहता है। कलियुग के कारण यदि तुम धन कमाना चाहो, लीडरी, शासन, प्रभाव, यश कीर्ति प्राप्त करना चाहो तो मैं रोकता नहीं मेरे भाई, खूब कमाओ दौलत को, लीडरी और अधिकार भी प्राप्त करो, यश भी, परन्तु इनपर सोम का रंग चढ़ा लो। करो सब–कुछ, सौम्यता से करो। ऐसा करने से 'प्रेय' और 'श्रेय' दोनों को प्राप्त करने में सफलता मिल जाएगी।

और फिर धन कमाने का विरोध मैं कैसे कर सकता हूँ? मैं भी तो जीवनभर

thearyasamaj.org

धन कमाता रहा। संन्यास लिये तो अभी बीस ही वर्ष हुए, इससे पहले धन तो कमाता ही था। धन के बिना तो आर्यसमाज का काम भी नहीं चलता। अभी थोड़ी देर पहले आपके प्रधान जी ने मुझे कहा कि 'आपकी कथा के बाद हम आर्यसमाज के लिए धन की अपील करेंगे।' मैंने उन्हें कहा, 'कदापि ऐसा मत कीजिये। मैं धन का विरोध करता हूँ और आप मेरी ही कथा के बाद धन के लिए अपील करेंगे?' परन्तु यह तो मैंने हँसी में कहा। सच यह है कि धन के बिना किसी का काम चलता नहीं। आर्यसमाजवाले धन के लिए अपील करें तो आप जी खोलकर उन्हें धन दीजिये। यदि आज साथ नहीं लाये तो कल ले आना। नोटों के बण्डल ले आना और सौ रुपये से कम के नोट लाना नहीं, तब देखो प्रधान जी प्रसन्न होते हैं या नहीं।

धन से सब लोग खुश होते हैं भाई! धन के लिए तो दुनिया दीवानी हो रही है। अमेरिका की बात मैंने कल सुनाई थी और शायद उस सेठ की भी जो धर्मराज के पास पहुँचा तो धर्मराज ने उसके कर्मों का हिसाब देखकर परमात्मा के पास रिपोर्ट की कि "इस आदमी ने आधे पुण्य किये हैं, आधे पाप। यह स्वर्ग में भी रहेगा, नरक में भी" परमात्मा बैठे थे अच्छे मूड में; बोले– "क्यों सेठ, पहले स्वर्ग में जाना चाहते हो या नरक में?" सेठ जी ने हाथ जोड़कर कहा– "स्वर्ग हो या नरक, मुझे तो वहाँ भेजिये महाराज, जहाँ चार पैसे का लाभ हो।"

अर्थात् नरक मे रहना भी स्वीकार है, केवल चार पैसे का लाभ प्राप्त करने के लिए।

ऐसी है दुनिया! इस दुनिया में यदि मैं धन के विरोध में बोलूँ तो कैसे? बोलूँ तो अगले वर्ष यह करोलबाग वाले ही मुझे बुलायेंगे नहीं।

इसलिए धन के विरोध में मैं नहीं कहता मेरे भाई! केवल यह कहता हूँ कि धन कमाना है तो इसको भी 'सोम' के रंग में रंग दो। ऐसा नहीं करोगे तो वही हाल जो आज धन के पीछे भागनेवाली दुनिया का हो रहा है। धन बहुत है, इसके लिए भाग–दौड़ भी बहुत, परन्तु सुख नहीं, चैन नहीं, दुःखी हो उठी है दुनिया, एक हाहाकार मचा है हर ओर।

फिर मैंने यह भी बताया कि यह सोम गुण, यह 'सौम्यता' आती कैसे है? प्रेमा भक्ति से। भगवान् के लिए अपने मन के अन्दर ऐसा प्यार पैदा करने से जो किसी रुकावट को माने नहीं, हर बलिदान के लिए तैयार हो, हर तप के लिए कटिबद्ध। ऐसी अवस्था हो तो भगवान् के दर्शन होते हैं जरूर। परन्तु कहाँ होते हैं? किसी तीर्थ, जंगल या पहाड़ पर नहीं, बल्कि इस मनुष्य–शरीर के अन्दर, जिसमें भक्त और भगवान् दोनों इकट्ठे, रहते हैं और उस समय होते हैं जब भक्त बाहर की ओर नहीं, अन्दर की ओर देखता है; बाहर की दुनिया को भूल जाता है, अपने अन्दर बैठे हुए भगवान् को खोजता है, जब बाहर के पट बन्द हो जाते हैं, अन्दर के खुलते हैं–

नैनों की कर कोठड़ी, पुतली पलँग बिछाय।
पलकों की चिक डालके, पी को लिया रिझाय।।

अन्दर की ओर देखना, अन्तर्ध्यान होना, सब ओर से मन को रोक देना, केवल प्रभु के दर्शन के लिए लगा रहना, यही योग है–

"योगश्च चित्तवृत्तिनिरोधः।"

'चित्त की वृत्तियों को रोक देना ही योग है।' कोई कठिन बात नहीं यह। इसके लिए केवल अभ्यास की आवश्यकता है–

"अभ्यासयोगयुक्तेन चेष्टानन्यकामना।"

'अभ्यास से योगी होता है। अभ्यास से यह अवस्था उत्पन्न होती है कि प्रभु प्रीतम के सिवाय किसी की कामना न रहे, किसी के लिए कुछ करने की इच्छा न रहे।' निरन्तर अभ्यास करते जाओ, करते जाओ, करते जाओ तो याद रखो वह प्रीतम मिलेगा अवश्य। उसके लिए किसी दूसरी जगह जाने की आवश्यकता नहीं। वह सब जगह उपस्थित होने पर भी तुम्हारे इस शरीर के अन्दर बैठा है, यहीं दिखाई देता है, क्योंकि इसके अन्दर देखनेवाला अर्थात् आत्मा भी उपस्थित है; देखता है आत्मा, दिखाई देता है परमेश्वर। दोनों जहाँ उपस्थित होंगे, वहीं तो देखने और दिखाई देने का काम होगा भाई! बाहर ढूँढने से क्या मिलेगा! अन्दर बैठा हुआ परमेश्वर कहता है–

मो को कहाँ ढूँढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।

कई लोग बेज़ुबान बकरे या बकरी की बलि देकर समझते हैं कि भगवान् को पा लिया। यह तो अनर्थ है। बकरे या बकरी को बलिदान करने से भगवान् नहीं मिलते। वह तो तुम्हारे अन्दर है भाई! तुम्हारे इतने समीप कि उनसे ज़्यादा समीप कुछ भी नहीं–

मो को कहाँ ढूँढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं बकरी ना मैं भेडी, ना मैं छुरी गँडास में।
नहीं खाल में नहीं पूँछ में, ना हड्डी ना मांस में।
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद ना कऽवा कैलास में।
खोजी हो तो तुरत मिलूँगा, पलभर की तालाश में।

अरे खोज करके देखो, वह तुम्हारे अन्दर बैठा है और तुम बाहर टक्करें मारते फिरते हो–

ज्यों तिल माहीं तेल है, चकमक माहीं आगें।
तेरा प्रभु तुझमें बसे, जाग सके तो जाग।।

वह तो तुम्हारे अन्दर है मेरे भाई! मेरी माँ! बाहर कहाँ ढूँढते फिरते हो? कस्तूरी हिरण होता है न, सुगन्ध उसकी नाभि से आती है। वह समझता है कहीं बाहर है यह सुगन्ध। उसको ढूँढता हुआ जंगल में मारा–मारा फिरता है–

कस्तूरी नाभी बसे, मृग ढूँढे वन माहिं।
ऐसे घट में हैं पिया, दुनिया जाने नाहिं।।
जा कारण जगढूँढिया, सो तो घट ही माहिं।
परदा दीया भरम का, ताते सूझे नाहिं।।
मैं जानूँ हरि दूर हैं, हरि हिरदय भरपूर।
मानष ढूँढे बाहर से, नेड़े होकर दूर।।

नहीं मेरे भाई! दूर जाने की आवश्यकता नहीं। बाहर जाने की आवश्यकता नहीं, तुम्हारा प्रीतम तुम्हारे अन्दर बैठा है। निरन्तर अभ्यास से उसको देखने का यत्न करोगे, तो वह दृष्टिगोचर होगा। यह अभ्यास करो नहीं, तीन–चार दिन ध्यान लगाओ और कहो कि यह सब बेकार है, नज़र तो कुछ आता नहीं। इस प्रकार काम बनेगा नहीं। भक्ति के लिए आवश्यक है निरन्तर स्मरण करना, अपने प्रेमी को याद करना। यह स्मरण यदि वाणी से करोगे, यदि बार–बार 'ओं तत् सत्! ओं तत् सत्' कहोगे तो वाणी पवित्र होगी अवश्य। परन्तु मन पवित्र होगा उस समय जब उसके गुणें को अपने अन्दर धारण करोगे, जिसे तुम प्रीतम और प्यारा कहते हो। देखो, मित्रता होती है उन लोगों में, जो एक–दूसरे के सदृश हों, एक–दूसरे के जैसे हों। आत्मा और परमात्मा एक–दूसरे जैसे हैं, एक–दूसरे की बिरादरी के। आत्मा भी अजर, अमर अनादि और सदा रहने वालों है, परमात्मा भी; आत्मा भी सत् और चित् है।, परमात्मा भी। दोनों में अन्तर है तो यह कि आत्मा थोड़ा जानने वाला है, परमात्मा सब–कुछ जानने वाला। आत्मा ससीम है।, परमात्मा असीम। एक आनन्द की खोज में है, दूसरा आनन्द का भण्डार। एक जीवात्मा है, दूसरा परम आत्मा। परन्तु परम होने पर भी है तो वह आत्मा ही। इसलिए दोनों की मित्रता बहुत आसानी से होती है। परन्तु कब होती है? जब आत्मा के अन्दर परमात्मा के लिए प्रेम, अनुराग, श्रद्धा और विश्वास जाग उठे; भक्ति की ऐसी भावना जाग उठे कि उसके सामने प्रेम भी पीछे रह जाय। प्रेम एक समुद्र है। उसके अन्दर जाकर मोती मिलते हैं। ज्यों–ज्यों ज्यादा गहराई में जाओगे, त्यों–त्यों ज्यादा सुंदर मोती मिलेंगे। इस समुद्र का अन्त कहीं है नहीं; थाह कोई है नहीं। ज्यों–ज्यों आगे बढ़ो, त्यों–त्यों वह आनन्द मिलेगा जिसको बता नहीं सकते, जिसका वर्णन दुनिया की कोई भाषा कर नहीं सकती।

कल मैंने महाकवि रवीद्रनाथ टैगोर की बात सुनाई थी न! छः हजार कविताएं लिखने के बाद भी उन्होंने कहा था– ''मैं जो कुछ गाना चाहता था उसे गा नहीं सका, जो कहना चाहता था वह कह नहीं सका। सोचता था यह कहूँगा, वह कहूँगा। तब शब्द बाहर आ जाते थे, अर्थ अन्दर रहा जाता था।'' और सच ही प्रेम में यही हालत होती है। प्रेम जब अपनी सीमा पार पहुँच के भक्ति में बदलता हैं तो होंठ बन्द हो जाते है, वाणी मौन–

जिन्हों का इश्क सादिक है,
वो कब फरियाद करते हैं,
लबों पर मुहरे–खामोशी,
दिलों में याद करते हैं।

जिनके दिल में प्यार का यह समुद्र जाग उठता है उनके लिए बाहर की दुनिया व्यर्थ हो जाती है।, बाहर के आडम्बर बेकार। वे केवल अपने अन्दर देखते हैं, जहाँ केवल वे हैं और उनका प्रीतम। प्रेमी और प्रीतम के सिवा वहाँ कोई तीसरा नहीं। ऐसी हालत हो तो फिर परमात्मा का प्रेमी दीवाना न होगा और क्या होगा? केवल बाहर नहीं, अन्दर भी उसे अपने प्रीतम के सिवा कोई वस्तु सुन्दर मालूम नहीं होती। उसकी दृष्टि में बाकी सब कुछ व्यर्थ, निरर्थक मालूम होने लगता है। परमात्मा को अपना मित्र मानकर वह कहता है–

तू अपने हुस्न को जरा मेरी नजर से देख।
ऐ दोस्त शश जहान में तेरे सिवा नहीं।।

और सुनो! भक्त जब इस प्रकार प्रभु को चाहता है तो प्रभु भी उसको प्यार करते हैं। वह उसके प्यार को और भी बढ़ाते हैं, भक्ति को बढ़ाते हैं। इस भक्ति और प्यार को दीवानगी की हद तक पहुँचा देते हैं। अथर्ववेद में एक मंत्र है–

उन्मादयत मरुत उदन्तरिक्ष मादय।
अग्न उन्मादया त्वमसौ मामनु शोचतु।।

अथर्व. 6।130।4

इसका अर्थ सुनना चाहते हो आप? अर्थ है–

ऐ हवाओ! मुझे पागल बना दो।
ऐ आकाश! मुझे दीवाना बना दो!
ऐ आग! तुम भी अपना जीवन मुझे दो!

परन्तु सुनो! ऐ हवा के झोंको! ऐ आकाश के विस्तार! ऐ आग के शोऽलों! केवल मुझे नहीं, मेरे प्रीतम प्रभु को भी मेरा प्रेमी बना दो ताकि वह मुझे एक पल भर भी भूल न सके। वह भी मेरे लिए व्याकुल हो मेरे लिए बेचैन हो।

यह है वेद की प्यारभरी वाणी–

उल्फत का तब मजा है कि दोनों हों बेकरार।
दोनों तरफ हो आग बराबर लगी हुई ।।

कबीर ने कहा था–

प्रीत लगी तुझ नाम की, पल ही बिसरे नाहीं।
नजर करों अब मेहर की, मोहे मिलो गुसाई।।
विरह सतावे मोहिं को, तड़पे जियरा मेरा।
तुम देखन को चाव है, प्रभु मिलो सवेरा।।
नैनाँ तरसें दरस को, पल ना पलका लागे।
दर्दमन्द दीदार का, रात दिना ही जागे।।

और फिर उन्ही महात्मा कबीर ने कहा है–

कांची ते सांची भई, जब ही प्रीत की पीर।
पाछे पाछे हर फिरें, कहत कबीर कबीर।।

जब प्यार का दर्द कच्चा न रहें, सच्चा हो जाय, पक्का हो जाय, तो फिर केवल भक्त ही भगवान् के लिए बेचैन नहीं होता, भगवान् भी भक्त के लिए बेचैन होते है; साधक और साधिका के दिल में सच्ची लगन हो तो वह भगवान् को भी मिला देती है–

उन्हें भी जोशे–उल्फत हो तो लुत्फ उट्ठे मुहब्बत का,
हमीं दिन–रात गर तड़पे तो, फिर इसमें मजा क्या है!

शेष अगले अंक में....

गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर गुरु के प्रेरक–सूत्र

● पं. वेद प्रकाश शास्त्री

प्रत्येक छात्र की यही अभिलाषा होती है कि वह अच्छे अंक प्राप्त करे, उसका प्रदर्शन श्रेष्ठ हो, प्रतिभाशाली छात्रों में गणना हो, प्रतिस्पर्धाओं में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करे, समाचार पत्रों में उसका भी नाम छपे। परन्तु वह वहां तक पहुंच नहीं पाता। अन्ततः निराश होकर घर बैठ जाता है अथवा 'जो है जैसा है' की स्थिति को विवशतः स्वीकार कर लेता है। कभी–कभी तो वह सोचने लगता है–

हो गए बर्बाद यूं ही किताबे जिन्दगी में।
वर्क कुछ तो डाले फाड़ कुछ हवा में उड़ गए।।

प्रिय छात्रो! शिखर पर पहुंचने के लिए "चढ़े तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकनाचूर" सदृश साहस जुटाना पड़ता है। दिन–रात एक करना पडता है। उसे अपने लक्ष्य के अतिरिक्त कुछ दिखाई ही नहीं पड़ता है। जैसे अर्जुन की दृष्टि पक्षी की आंख पर थी, वैसे ही चाहक की दृष्टि केवल अपने लक्ष्य पर होती है।

आइए, कुछ प्रारम्भिक सूत्रों को ग्रहण कर, पौड़ी–पौड़ी ऊपर चढ़ने का प्रयत्न करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु तत्पर हो जाएं। कभी ऊंची कूद और लम्बी छलांग भी लगानी पड़ सकती है, इसके लिए भी तैयार रहना होगा।

खुद कदम चूम लेती है आकर मंजिल।
अगर चलने वाला हिम्मत न हारे।।

1. सुलेखन – प्रत्येक विषय की लिखाई सुन्दर और स्पष्ट हो।

2. पूर्ण तैयारी– प्रत्येक विषय की पूर्ण तैयारी करें। अति महत्वपूर्ण विषयों के साथ साधारण विषयों को भी पढ़ें। उनकी उपेक्षा न करें। एक या दो अंकों वाले प्रश्न छोड़ें नहीं। एक–एक अंक मूल्यवान् है। सदैव ध्यान रखें– जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घट :।

बूंद–बूंद से घड़ा भर जाता है।

प्रतियोगिता/प्रतिस्पर्धा में अनेक छात्र एक, आधे अथवा आधे के आधे अर्थात् 0.25 अंक से पीछे रह जाते हैं। अतः विस्तृत एवं सार्थक अध्ययन करना ही श्रेयस्कर है।

3. निबन्ध, निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर शीर्षक, उपशीर्षक, अनुच्छेद बना कर लिखें।

4. किसी विषय को रटने के बजाय समझने का प्रयत्न करें। विज्ञान या गणित के सूत्र, अन्य विषयों के शीर्षक, उपशीर्षक, उद्धरण, परिभाषाएं, महत्वपूर्ण कथन भलीभांति याद करें। सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय को समझें। इससे बुद्धि भी सूक्ष्म और सक्षम होगी। किसी भी विषय की एक से अधिक पुस्तकें देखने का प्रयत्न करें, क्योंकि किसी पुस्तक में कोई विषय सुस्पष्ट एवं विस्तृत होता है तो अन्य पुस्तक में अन्य विषय।

5. भाषा का प्रश्न पत्र हल करते समय शुद्ध वर्तनी, उपवाक्य, वाक्य रचना का ध्यान रखें। लिंग, वचन, समरूपी, समानार्थक, भिन्नार्थक, विपरीत, विशेषण आदि शब्दों का अन्तर, भेद, अर्थ, परिभाषा अच्छी प्रकार अवश्य सीख लें।

लिखते और पढ़ते समय वर्तनी (स्पेलिंग) का विशेष ध्यान रखें।

विराम चिह्नों का यथा स्थान प्रयोग अवश्य करें।

हिन्दी, पंजाबी में प्रयुक्त होने वाले एक ही प्रकार के शब्दों का लेखनीय अन्तर अवश्य ध्यान रखें। यथा–हिन्दी में कवि, पंजाबी में कवी, लेखक–लेखिक, लाइनें– लाइनां आदि। अर्थ भेद पर भी ध्यान दें– कौर का अर्थ हिन्दी में–ग्रास, पंजाबी–स्त्रीवाचक–अमृत कौर हिन्दी–कनक–सोना,चतूरा–पंजाबी–गेहूँ। व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों से पूर्णतः बचने का प्रयत्न करें।

इसी प्रकार अन्य भाषाओं के शब्दों का अन्तर ध्यातव्य है। इसके लिए प्रकरण का ज्ञान होना आव्यावश्यक है।

6. उच्च कक्षाओं की प्रतिस्पर्धा में किसी निर्दिष्ट विषय पर अनुच्छेद रचना, सम्बधित विभाग को पत्र लिखना, सूचना निकालना, सामयिक विषय पर टिप्पणी भी हो सकती है।

7. पारिभाषिक शब्दावली–हिन्दी से अंग्रेज़ी, अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवादार्थ प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान अनिवार्य है, अन्यथा प्रश्न हल करने में कठिनाई आ सकती है।

8. आप किस प्रान्त के हैं। किस प्रान्त की परीक्षा दे रहे हैं? वहां का परीक्षा माध्यम क्या है? स्तर कैसा है? प्रान्तीय भाषा क्या है? एतद् विषयक ज्ञान होना अनिवार्य है। पंजाब के छात्र कई बार राजस्थान की परीक्षाएं देते हैं परन्तु वहां की भाषा हिन्दी होने के कारण उन्हें पारिभाषिक शब्दों के समझने में कठिनाई होती है।

9. ऑन लाईन परीक्षाएं– वर्तमान युग कम्प्यूटरीय युग है। कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं रहा है। अतः कम्प्यूटर, इन्टरनेट आदि के ज्ञान–विज्ञान, व्यावहारिक कार्य एवं प्रयोग से परिचित होना अत्यावश्यक है। प्रवेश फार्म भरने, परीक्षाएं अथवा एतत्सम्बन्धी शिक्षण सामग्री की प्राप्ति कम्प्यूटरीय ज्ञान पर निर्भर है। यदि इसके हुतगति से प्रयोग का अभ्यास न हुआ तो प्रतिस्पर्धा में आपके अटक जाने,पीछे रह जाने पर कोई आश्चर्य न होगा।

10. शान्त वातावरण–पढ़ने का स्थान ऐसा हो, जहां का वातावरण शान्त हो। पास के कमरे में टी.वी. न चल रहा हो। बच्चे न खेल रहे हों। माता–पिता भी इसमें सहयोग करें।

11. सह–अध्ययन–अपने दो–तीन अच्छे सहपाठियों को चुनें। जो गप्पी न हों। पढ़ाई के समय पढ़ाई करें, खेलने के समय खेलें। उनके साथ बैठ कर पढ़ें। उनसे सुनें और सुनाएं, लिख कर देखें। लिखना, पढ़ना बराबर मात्रा में होना चाहिए। विभिन्न विषयों पर विचार करें।

12. स्वस्थ स्पर्धा– अपने घनिष्ठ सहपाठियों से आगे निकलने का प्रयत्न करें लेकिन इसमें ईर्ष्या नहीं होना चाहिए। किसी को हानि पहुंचा कर आगे न बढ़ें। अपनी लगन, बुद्धि, परिश्रम पर विश्वास रख कर आगे निकलें।

13. टाइम टेबल– प्रत्येक विषय की पढ़ाई के लिए टाइम टेबल बना लेना चाहिए। सरल विषयों की उपेक्षा न करें। सरल विषयों पर अच्छी पकड़ होने से कठिन विषय की कमी पूरी हो जाती है। पुनरावृत्ति के लिए समय अवश्य निकालें।

14. विषय परिवर्तन–यदि एक विषय पढ़ रहे हैं तो उसे अधूरा छोड़ कर ही दूसरा और फिर तीसरा विषय न पढ़ने लगें। स्थिर मन से एक–एक कर के पढ़ें। कठिन के बाद सरल विषय पढ़ने से मस्तिष्क हल्का हो जाता है।

15. प्रश्न पत्र हल करना– (क) प्रतिस्पर्धा की परीक्षा से पूर्व कई वर्षों के प्रश्न पत्र अवश्य देख लेने चाहिएं। विभिन्न विश्वविद्यालयों, शिक्षा बोर्डों के प्रश्न पत्र तुलनात्मक दृष्टि से भी देखें।

(ख)परीक्षा में प्रश्न पत्र मिलने पर अथवा ऑन लाईन हल करने की स्थिति में ध्यानपूर्वक स्थिर मन से पढ़ें। सभी भागों का अंकों के अनुसार छोटा–बड़ा उत्तर दें। इधर–उधर की बातें न लिखें। वैकल्पिक उत्तर होने पर ध्यानपूर्वक सोच समझ कर उत्तर चुनें। प्रायः निगेटिव मार्किंग भी होती है।

16. नकल के सहारे न रहें। नकल के सहारे कम्पटीशन में सफलता नहीं मिल सकती। मैरिट में आना तो दूर की बात है। आजकल प्रश्न पत्र भी तीन से पांच प्रकार के आते हैं। अतः पहले से ही पूर्ण तैयारी रखें। आत्मविश्वास के साथ अपनी स्मरण शक्ति के आधार पर प्रश्न पत्र हल करें। नकल के लिए इधर–उधर देखना समय नष्ट करना है।

17. पुनरावृत्ति–समय–समय पर पाठों–विषयों की पुनरावृत्ति अवश्य करते रहें। क्योंकि पढ़ा हुआ पाठ कुछ समय के पश्चात् भूलना प्रारम्भ हो जाता है।

वैज्ञानिक शोध के अनुसार बिना दोहराए हम 24 घण्टों में 82% भाग भूल जाते हैं। सिर्फ 18% ही याद रह पाता है अतः बीच–बीच में पाठों की पुनरावृत्ति अवश्य करते रहें।

18. शिक्षकों से सहायता–पढ़ते हुए अनेक बातें ऐसी होती हैं जो समझ में नहीं आतीं। उन्हें समझने के लिए शिक्षकों से सहायता अवश्य लें। संकोच न करें।

19. उच्च कक्षाओं अथवा सर्विस सम्बन्धी परीक्षाओं में तो पाठ्यक्रमेतर बौद्धिक, तार्किक, ऐतिहासिक, भौगोलिक आदि विषयक प्रश्न भी पूछे जाते हैं, जिनके लिए विशेष तैयारी की आवश्यकता होती है।

20. क्षमता एवं रुचि की पहचान–अपनी क्षमता को पहचानें। आत्मविश्वास जगाएं। अपनी रुचि पर भी विचार करें। आप कुछ चाहते हैं, अभिभावक कछ चाहते हैं–इससे सफलता में गतिरोध आ सकता है। अतः दोनों के मध्य विचार विमर्श के द्वारा समस्या का निराकरण करना चाहिए।

21. पुस्तकों की सुरक्षा–

(1) पुस्तकें बैग के अन्दर संभाल कर रखें। ऐसे ही उल्टी–सीधी न ठूंस दें। यदि संभाल कर रखेंगे तो पूरा साल चलेंगी। सभाल कर न रखने से कई बच्चों की पुस्तकें छः महीने भी नहीं चलतीं। वर्षान्त में आप इन्हें निर्धन छात्रों को देकर पुण्य का कार्य भी कर सकते हैं।

(2) पुस्तकों के कवर पृष्ठ पर या अन्दर चित्र, कार्टून आदि न बनाएं। कक्षा में कई छात्र पीछे बैठ कर ऐसा ही करते हैं।

(3) गीत, कविता या अन्य अनावश्यक चीजें न लिखें।

(4) विशेष स्थान या पढ़ाई की समाप्ति पर कोने न मोड़ें, अपितु कागज रखें।

(5) पढ़ने के पश्चात् या बीच में कोई अन्य काम आ जाने पर पुस्तक उल्टी न रखें, अपितु कोई कागज रखें।

(6) प्रत्येक पुस्तक एवं कापी पर कवर चढ़ाएं। आवश्यक होने पर जिल्द भी करवाएं।

(7) हंसी–मजाक या झगड़े के समय परस्पर पुस्तकें न मारें।

(8) परस्पर लेन–देन के समय पुस्तकें फेंक कर न दें।

(9) घर में पुस्तकें मेज पर या अलमारी में क्रम से रखें। यदि पुस्तकें विषयानुसार क्रम से रखी जायं तो ढूंढने में आसानी रहती है। क्रम से रखीं पुस्तकें देखकर दर्शक का मन भी प्रसन्न हो जाता है और आप भी प्रशंसा के पात्र बनते हैं।

(10) पुस्तक की सुरक्षा हेतु अग्रलिखित सन्देश भी ध्यातव्य है –तैलाद् रक्षेद् रक्षेद् रक्षेत् शिथिल बन्धनात्।

मूर्खहस्ते न दातव्यं एवं वदति पुस्तकम्।।

पुस्तक कहती है–प्रिय पाठको। मेरी तेल से रक्षा करो, पानी से रक्षा करो और ढीले बन्धनों से बचाओ, मूर्ख के हाथ में मत दो।

शास्त्री भवन, 4–E, कैलाश नगर, फाजिलका, पंजाब

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका–सूक्ष्म–इच्छाओं से मुक्त कैसे हुआ जाए। क्या संसार में रहते हुए यह संभव है?

समाधान – वस्तुतः चाहे स्थूल इच्छाएं हो, चाहे सूक्ष्म इच्छाएं, दोनों के पीछे एक ही मनोविज्ञान (साइकोलॉजी) है। पहले यह जानिए कि इच्छा की उत्पत्ति क्यों होती है? उस साइकोलॉजी को पकड़िए, फिर उत्तर समझ में आएगा:–

● दरअसल जहाँ हमको सुख दिखता है, जिस वस्तु में हमको सुख प्रतीत होता है, जहाँ हमको सुख मिला है या भविष्य में सुख मिलने की आशा है, वहाँ उस–उस वस्तु को प्राप्त करने की हमारी इच्छा होती है।

● अगला प्रश्न उठता है कि, इच्छा से छूटें कैसे? उत्तर है–इससे उल्टा काम करो। जहाँ सुख दिखता है, वहाँ–वहाँ दुःख देखना शुरु करो। जब दुःख देखना शुरु करेंगे, तो इच्छा स्वतः खत्म हो जाएगी। कैसे? जैसे कि एक व्यक्ति ने सोचा कि:–

''बढ़िया आठ लाख की होंडा–सिटी कार खरीदेंगे। एयरकंडीशन कार है, बढ़िया चमकदार है। ठाठ से जाएंगे। लोग भी वाह–वाह करेंगे कि–देखो साहब, इसके पास बढ़िया गाड़ी है। प्रशंसा भी होगी, कार का सुख भी मिलेगा, धूप में गर्मी में नहीं मरना पड़ेगा, बस में धक्का नहीं खाना पड़ेगा, आराम से जाएंगे।''

कार में सुख देखकर उसने कार खरीद ली। जब कार खरीद ली, तो फिर आया दुःख। क्या दुःख आया?

जब वो हाइवे पर चल रहा था, तो उसको टेंशन हो गई, पीछे से एक ट्रक ड्राइवर बेहिसाब ट्रक चला रहा है, वो कहीं पीछे से कार को ठोकेगा तो नहीं? उसको हर समय डर लगता है। कोई दाईं ओर से ठोकेगा, कोई बायीं ओर से ठोकेगा, कोई पीछे से ठोकेगा, कोई आगे से । क्योंकि इनका कोई भरोसा नहीं सब आजकल बेहिसाब गाड़ी चलाते हैं।

फिर कार पार्किंग में खड़ी कर दी। और गए शॉपिंग–मॉल में सामान खरीदने। तब यह डर लगता है कि पीछे से कार चोरी न हो जाए। फिर कहीं पार्क के पास खड़ी कर दी। और गार्डन में सैर करने गए, तो तीसरा डर यूँ लगता है कि वो छोटे–छोटे बच्चे आए हैं वो कार पर लकीर (स्क्रेच) न मार दें। वे इतनी बढ़िया कार की हालत बिगाड़ देंगे।

शरारती बच्चों को समझ तो नहीं, वे तो अपना खेल समझते हैं। वे यह थोड़ी जानते हैं कि गाड़ी आठ लाख की है, इसमें लकीर नहीं मारनी चाहिए। जैसे वे दीवार पर लकीर मारते हैं, वैसे कार पर भी मार देंगे।

फिर उसके पड़ोस में एक मित्र के परिवार में एसके बेटे की शादी थी। एक और टेंशन आ गई। मित्र के घर में शादी है। यह मित्र तीन चार दिन के लिए कार उधार माँगने आएगा। अब बोलिए, कार में सुख दिख रहा है, कि दुःख दिख रहा है? दुःख दिखाई दिया न। बस ऐसे ही दुःख देखना शुरु करो, तो आपकी कार खरीदने की इच्छा खत्म हो जाएगी। इसलिए अगर आप मिश्रित दुःख–सुख भोगना नहीं चाहते, तो कार की इच्छा छोड़ दो।

● आपके सामने कुल तीन विकल्प (ऑप्शन) हैं–

पहला है –केवल 'सुख' मिलना चाहिए।

दूसरा है – केवल 'दुख' मिलना चाहिए।

तीसरा है – 'सुख और दुःख' दोनों मिश्रित होने चाहिए।

बताइए, तीन में से कौन सा विकल्प आपको स्वीकार है? पहले वाला, केवल सुख। तो कार में केवल सुख मिलता है क्या? नहीं मिलता न। या तो दुःख मिलेगा या फिर सुख–दुख दोनों मिश्रित (मिक्स) मिलेंगे।

एक बार मैंने भी कार खरीदी थी और दो साल कार चलाई। यह सारा दुःख मेरी समझ में आ गया। मैंने कहा–निकालो इसको, यह 'कार' नहीं 'बेकार' है। निकाल दी। अब मैं सुखी हो गया हूँ। अब कार नहीं है खूब शाँति और आराम से जी रहा हूँ।

कार वाला बनने में सुख तो है, पर उसके साथ भीषण दुःख भी है। मैं मना थोड़ी कर रहा हूँ मैं सिर्फ बता देता हूँ कि कार खरीदोगे, तो ये दुःख भी आएँगे। जिसको दुःख भोगना हो वह कार खरीद ले। और जिसको दुःख से छूटना हो, वो कार छोड़ दे। मुझे छूटना था, मैंने कार छोड़ दी। अब मैं सुखी हो गया।

● मैं जहाँ जाता हूँ, वहीं कार मिल जाती है। बोलो, क्या घाटा है? आपके पास तो घर मे दो कारें होंगी, तीन कारें होंगी। मेरे पास तो एक हजार कारें हैं। जिस नगर में जाता हूँ वहीं सामने छह कारें खड़ी रहती हैं। एक व्यक्ति कहता है–आप मेरी गाड़ी में बैठो, दूसरा कहता है मेरी गाड़ी में बैठो। अब आप ही बताओ, मुझे क्या कमी है। फिर मैं क्यों कार खरीदूँ। समझ में आई बात।

● आप सोचते होंगे–हम भी ऐसा ही कर लेंगे। अब ऐसा करना है, तो मेरी तरह 'संन्यासी' बनना पड़ेगा। यह घर–बार छोड़ना पड़ेगा, वैराग्य उत्पन्न करना पड़ेगा, तपस्या करनी पड़ेगी। इतनी सारी कारें ऐसे ही नहीं मिलती हैं।

● इच्छाओं को इस तरह से जितना हो सके, कम करें। संसार में सुख नहीं, दुःख देखें। केवल मोक्ष में, सुख देखें। इसके अलावा इच्छाओं से छूटने का और कोई तरीका नहीं है।

शंका–सुंदर शरीर, कपड़े, गाड़ी, सुंदर काले बाल, पूरी लंबाई का क्या महत्व है?

समाधान – सुंदर शरीर, सुंदर कपड़े, गाड़ी, चमकदार मकान, बँगला, काले बाल और अच्छी हाइट (लंबाई) इसका महत्व है कि–

● इसको देखकर व्यक्ति संसार में फँसता है। चमक–दमक वाली चीजों को देखकर व्यक्ति का दुनिया में राग बढ़ता है। जो कि बन्धन में बाँधने वाला है। अगर भगवान ने हमको सुंदर शरीर दिया है तो वो हमारे कर्मों का फल है। पर यह इसलिए नहीं दिया कि हम फैशन कर–करके दुनिया को फँसाते रहें, संसार के लोगों को यहाँ बंधन में डालते रहें। इसलिए ऐसा काम नहीं करना चाहिए।

● एक अन्य दृष्टि से शरीर अच्छा हो, बलवान हो, स्वस्थ हो, तो उससे व्यक्ति तेजी से काम करेगा, अच्छा काम करेगा।

● अच्छा शरीर इसलिए दिया है, ताकि पौष्टिक भोजन खाओ, शरीर को स्वस्थ बनाओ, बलवान बनाओ, मोक्ष प्राप्ति करो, समाज की सेवा करो, समाधि लगाओ। यह है इसका लाभ।

दर्शनयोग महाविद्यालय
रोजड़वन (गुजरात)

श्री बलवन्तसिंह आर्य का शान्ति एवं प्रेरणा दिवस सम्पन्न

आर्य समाज मकड़ौली कलां रोहतक के संस्थापक व वैदिक मिशनरी स्व. श्री बलवन्तसिंह आर्य का शान्ति एवं प्रेरणा दिवस सभा कार्यालय बलिदान भवन दयानन्द मठ रोहतक में यज्ञ से प्रारम्भ हुआ जिसमें हरियाणा के कोने–कोने से पधारे सैकड़ों व्यक्तियों ने दिवंगत आत्मा श्री बलवन्तसिंह आर्य के सम्मान में आहुतियां देकर अपना हार्दिक शोक प्रकट किया।

श्री बलवन्तसिंह आर्य का 4जून 2014 को रोहतक में प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में लगभग 96 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया था। उसी दिन सायं 6 बजे दाह संस्कार के अवसर पर आर्यसमाज के नेता स्वामी सुमेधानन्द सांसद भाजपा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली समेत आर्य समाज व अन्य अनेक सामाजिक संगठनों के सैकड़ों प्रतिष्ठित शोकाकुल व्यक्तियों ने आहुतियां देकर अपने हृदय को शान्त किया।

शान्तियज्ञ के सम्पन्न होने पर ज्येष्ठ सुपुत्र श्री सत्यव्रत आर्य के सिर पर पगड़ी बांधकर पगडी की सामाजिक रस्म पूरी की गई। इसके पश्चात् श्रद्धांजलि एवं प्रेरणा सभा का आयोजन हुआ। साधुओं तथा विद्वानों ने उनके साथ बिताए गए प्रेरणाप्रद संस्मरणों को याद करते हुए अपनी शोक संवेदना प्रकट की।

इस अवसर पर सभा के संरक्षक आचार्य बलदेव जी, स्वामी रामदेव जी व आचार्य प्रद्युम्न आदि के साथ विभिन्न लगभग 25 संस्थानों के शोक–सन्देश भी पढे गए। श्री हनुमन्त सिंह मकड़ौली कलां ने भी अपने भजन द्वारा महाशय जी के जीवन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर परिवार की ओर से विभिन्न गुरुकुलों एवं अन्य धार्मिक संस्थाओं के लिए 26,000/–रु. सात्विक दान भी किया गया।

thearyasamaj.org

ऋषि दयानन्द क्या थे

● हरिश्चन्द्रवर्मा 'वैदिक'

उनके विचार को भारत के लोगों ने ठीक से जानने का प्रयत्न नहीं किया। वे कुप्रथा और सुसंस्कार रुपी रोग से सबको छुड़ाने के लिये सत्य की कड़वी औषधि पिलाते रहे और सबको जागृत करने के लिये वेद ज्ञान रुपी गंगा जल का छिड़काव करते रहे। ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त बिल्कुल वैज्ञानिक था। उनकी जीवनी और उनके 'सत्यार्थ' प्रकाश को देखने से ज्ञात होता है। कि उन्होंने धर्म की सच्चाई को जान लिया था जैसे हंडी में पक रहा चावल पका है कि नहीं, उसके एक चावल को निकालकर देखने से ज्ञात हो जाता है, वैसे ही वेद मंत्र के सत्यार्थ को समझकर उन्हें ज्ञात हो गया कि यह ईश्वरीय ज्ञान है और वह सूर्य जैसा आज भी चमक रहा है। वह केवल धर्म का आदिस्त्रोत आध्यात्मिक ग्रन्थ ही नहीं है अपितु उसमे भौतिक का बीजात्मक ज्ञान भी है। तात्पर्य यह कि 'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। जरुरत है उसके एक –एक मंत्र को' देवता, और ऋषि को ध्यान में रखते हुए वैदिक व्याकरणादिक द्वारा समझने का।

सन् 1875 में ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज का उद्देश्य यह था कि उस समाज के विद्वान, संन्यासी और महात्मा जन देश–विदेश में जाकर–जिन्होंने वैदिक धर्म को ठीक से नहीं समझ पाया था और जिनको ईश्वर, जीव प्रकृति के सम्बन्ध में जानकारी नहीं हुई थी, उन सबको ज्ञान कराने तथा छः दर्शनकारों के कणाद मुनि का वैशेषिक दर्शन जिसमें परमाणु का सामान्य विशेष समवाय है, कपिल मुनि का 'सांख्यदर्शन' जिसमें प्रकृति का ज्ञान है, जैमिनी मुनि का' मीमांसा दर्शन जिसमें कर्म कप्रवेदवाद है, वेदव्यास जी का वेदान्त दर्शन जिसमें ब्राह्मज्ञान है, गौतम मुनि का 'न्याय दर्शन' जिससे सिद्धि समाधिपाद है, के ज्ञान–विज्ञान एवं उपनिषदों के आध्यात्मिकता से परिचय करावें। साथ ही सब को योगासन, योगाभ्यास, और सन्ध्योपासना तथा यज्ञ भी करावें।

यह ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज का नियम और सिद्धान्त इतना सुन्दर है कि जिन्होंने उसे समझा और अपना लिया वह मानव मनुर्भव और चरित्रवान बन गया। तात्पर्य यह कि जिनके ऊपर आर्य साहित्य के स्वाध्याय से , वैदिक सत्यविद्या का रंग चढ़ जाता है, उसके ऊपर दूसरे किसी मत का रंग नहीं चढ़ सकता। और जिनको वेद विद्या के ज्ञाता गुरु मिल जाते हैं उनके स्वभाव में शुद्धता आ जाती है।

आर्य समाज इतना श्रेष्ठ समाज था, जिनके विद्वानों और महात्माओं के सुझाव से बहुत से पौराणिक विचार वाले तथा बनाये गये ईसाई अदि सब आर्य बन गये और 'स.प्र' के माध्यम से वे लोग औरों को भी आर्य धर्म में दीक्षित करते गये।

इस प्रकार आर्य समाज का देश–विदेश में उन्नति का कार्यक्रम 100 वर्षों तक चलता रहा और उसका नाम यश फैलता रहा। पर पहले के कार्यकर्त्ता विद्वानों, संन्यासी और महात्माओं के न होने से 'आनन्द स्वामी और यज्ञ आचार्य पं. वीरसेन वेदश्रमी आदि के पश्चात, धीरे–धीरे आर्य समाज के नये कार्यकर्त्ता और मंत्रियों के आने से उनमे परस्पर विभिन्न कार्य–कारणों से एकता नहीं रह गई। इसलिये आर्य समाज की प्रगति पहले से कम हो गई, और ब्राह्मणवाद की बन पड़ी। जितना प्रचार आस्था चेनल पर पौराणिकता का हो रहा है उतना आर्य समाज का प्रचार नहीं हो पा रहा है। उसकी प्रतिभा कम गई है। केवल पत्र–पत्रिकाओं द्वारा ही सब अपना–अपना विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। जो आर्यों के अलावा अन्य कोई उसे न ही देखता न पढ़ता ही है।

बहुत से आर्य अपने आर्य सिद्धान्त से परे हो गये हैं। आहार–विचार भी बदल गया है, केवल कहने के लिये आर्य बने हुए हैं। आज विज्ञान के युग में बहुत कम लोग निरामिष भोजन करने वाले रह गये हैं।

अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। आजकल प्रचार का माध्यम 'टी.वी' चेनल है, यदि सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओं के मंत्री मिलकर 'टी.वी' के माध्यम से वैदिक धर्म, उपनिषदों का संदेश तथा ऋषि की जीवनी के सम्बन्ध में आधे घंटे तक के लिये दैनिक भाषण देते रहें, साथ ही शंका समाधान भी करते रहें तो आर्यों का समाज और उसकी विचारधारा घर–घर तक पहुँच सकती है और यह भी सबको उपदेश दें कि प्रतिमा पूजन के स्थान पर 'ऊँ' का प्रतीक बनावें और प्रत्येक परिवार देवयज्ञ सामग्रियों से किया करें तो इससे अनेक रोगों से बचा जा सकता है। और इससे वायु आदि के शोधन से दैवी शक्तियाँ प्रसन्न होती है। जिनसे सब कुछ ठीक हो सकता है।

धर्म और धन एक दूसरे के पूरक हैं। केवल एक को लेकर चलने से नहीं होगा। जीवन में दोनों को साथ लेकर चलना है। धर्म को स्वाध्याय और गुरु से तथा धन को बुद्धि और परिश्रम से प्राप्त करना है। आज के जमाने में बुद्धि और धन दोनों की आवश्यकता है। बुद्धि की वृद्धि शिक्षा और संस्कृति से , तथा धन की वृद्धि धन एंव प्रेमपूर्वक व्यवहार से होती है। यदि आप के पास कुछ भी धन नहीं है तो धन को कैसे प्राप्त कर सकते हैं, इसलिए ये माता–पिता से अथवा बैंक से कुछ धन लेकर धन को व्यवसाय में लगाकर उसकी वृद्धि कर सकते हैं (लाभ दाल में नमक बराबर होना चाहिए) जो नौकरी करते हैं उनको वेतन तो सरकार अथवा कंपनी के तरफ से प्राप्त होता ही है। यहां हम बड़े–बड़े मंत्री और अफसरों की बात नहीं कर रहे। गरीब एवं मध्यम वर्ग के व्यवसायों की कर रहे हैं। कलाकार और शिल्पी लोग कभी भूखे नहीं रहते, किन्तु प्राः शिल्पी अमीर भी नहीं होते। यदि आपके पास पैसा नहीं है तो एक कदम भी आगे नहीं जा सकते। बीमारी में इलाज नहीं करा सकते। बहुत से मध्यम और गरीब लोग धनाभाव से अच्छी चिकित्सा के न होने से मर जाते है। और जिनके पास धन है, वे विदेशों में चिकित्सा करा के ठीक हो जाते हैं। एक ही रोग से कोई काफी खर्च करके बच जाता है, और उसी रोग से गरीब धनभाव के कारण अच्छी चिकित्सा के ने होने से उसका देहान्त हो जाता है। इसलिए बिना धन के न धर्म हो सकता है, न बिना उसके भौतिक सुख शांति मिल सकती है।

प्रायः देखा जाता है कि जितने गरीब मजदूर होते हैं उनमें से बहुत से अपनी दिन भर की कमाई शराब के पीने–खाने में खर्च कर देते हैं।, ऐसे लोग भला कैसे अर्थिक उन्नति कर सकते हैं। इसके अलावा यदि दो व्यक्ति आय करने वाले हों और सात व्यक्ति खाने तथा बच्चों की पढ़ाई आदि में खर्च करने वाले होंगे तो बचत कुछ नहीं होगी। फिर चार व्यक्ति आय करने वाले नशाबाज हैं तो वे भी उन्नति नहीं कर सकते। इसलिये यदि अपने परिवार को सुखी देखना चाहते हैं और कुछ अर्थिक बचत करना चाहते हैं तो उसकी उन्नति के लिए नशा जैसे बुरी आदतों को छोड़ दें, और अपने बच्चों का अच्छे संस्कार दें।

आज देश में बढ़ रहे बलात्कारों से सभी भद्रजन संत्रस्त है। इसके अनेक कारण है। 1. मॉडल सुन्दरी प्रतियोगिता। 2. अर्धनग्न विदेशियों जैसा भारतीय संस्कृति के विरुद्ध अश्लील सिनेमा का प्रर्दशन 3. आसाराम का यौन शौषण 4. उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के पिता जी का यह कहना कि लड़के हैं गलतियां हो जाती हैं। 5. पुलिस प्रशासन की ढिलाई से, जिसमें कतिपय पुलिस भी शामिल तो तो भला बलात्कार जैसे जघन्य अपराध को कैसे रोका जा सकता है। अतः जब तक प्रशासन की कड़ाई नहीं होगी और बलात्कार करने वाले को आजीवन काराग्रह अथवा मृत्युदंड नहीं दिया जाएगा तब तक लड़किया सुरक्षित नहीं रह पायेंगी। यह भारत ऋषि मुनियों का देश है। इसकी रक्षा करनी है।

मु. पो. मुरारई, जिला वीरभूम (प. बंगाल)
731219, मो. 8158078011

पं. रामप्रसाद विस्मिल जयन्ती पर भजन संध्या एवं सम्मान समारोह

अध्यात्म पथ (पंजी.) मासिक पत्रिका द्वारा पं. रामप्रसाद बिस्मिल की जयन्ती के अवसर पर स्वस्ति महायज्ञ, विराट् भजन संध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन आर्य समाज बी –ब्लॉक, जकनपुरी में किया गया गया। इस समारोह के मुख्यअतिथि विधायक एवं दिल्ली सरकार के पूर्व वित्तमंत्री डॉ. जगदीश मुखी, एवं मुख्यवक्ता प्रख्यात साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया थे।

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने कहा कि आर्यसमाज से जुड़कर पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने देशभक्ति का पाठ पढ़ा और देश पर बलिदान हो गये। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। डॉ. जगदीश मुखी ने कहा कि जो जहाँ बैठा है वहाँ ईमानदारी से अपना काम करे, यही बिस्मिल के जीवन से सच्ची सीख होगी। सभी वक्ताओं ने पं. रामप्रसाद बिस्मिल के अभूतपूर्व त्याग, बलिदान एवं साहित्यक योगदान को याद किया तथा उनके जीवन से देशभक्ति की भावना के अनुकरण एवं अध्यात्म पथ पर चलने की प्रेरणा दी। भजन सम्राट श्री भारतेन्द्र मासूम ने पं. रामप्रसाद बिस्मिल के गीतों एवं भजनों से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध किया।

कार्यक्रम का संयोजन अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने किया। आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए पं राम प्रसाद बिस्मिल को श्रद्धांजलि दी

thearyasamaj.org

पुनर्जन्म (आवागमन)

● डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

पुनर्जन्म का आधार– कर्मफल सिद्धान्त के साथ ही पुनर्जन्म का सिद्धान्त संयुक्त है। हमारा वर्तमान जन्म पिछले जन्मों में किये हुए शुभाशुभ कर्मो का विपाक है। अगले जन्म का आधार वर्तमान जीवन में किये हुए शुभाशुभ कर्म होंगे। यदि कर्म और पुनर्जन्म का सिद्धान्त न होता तो हम इस लोक को अनियन्त्रित मानते और समझते कि यहाँ अन्यायपूर्वक मनमाने ढ़ंग से लोगों को दण्ड़ तथा पुरस्कार प्राप्त होते हैं।

यदि हमारे वर्तमान जन्म का आधार पूर्वजन्म के शुभाशुभ कर्म का परिणाम नहीं है तो वर्तमान जन्म से पूर्व हमारा जीव कहाँ था और क्या कर रहा था? क्योंकि जीव शाश्वत अर्थात् नित्य है। जीव के कर्म भी प्रवाह रूप से नित्य हैं। कर्म और कर्मवान् का नित्य सम्बन्ध होता है। पुनर्जन्म न मानने पर वर्तमान जन्म से पूर्व या पश्चात् जीव का अस्तित्व तथा ईश्वर का जीव के कर्म के प्रति फलप्रदातृत्व असिद्ध हो जाएगा? स्वामी दयानन्द के अनुसार पुनर्जन्म न मानने पर वर्तमान जन्म से पूर्व या पश्चात् जीव का निकम्मापन तथा परमेश्वर का भी निकम्मापन सिद्ध होगा। जीव और ईश्वर दोनों नित्य और शाश्वत है अतः जीव का कर्म कर्तृत्व–(**स्वतंत्रः कर्ता** के आधार पर) तथा ईश्वर का फलप्रदातृत्व भी नित्य है।

कृतहानि एवं अकृताभ्यागम– "पूर्व तथा परजन्म न मानने पर 'कृतकानि' तथा 'अकृताभ्यागम– दोष होगा। अर्थात् जीव इस जन्म के शुभकर्म का फल पाने से वञ्चित रहेगा यह **कृतहानि** होगी। तथा इस जन्म में हमने जो उत्तम सुख आदि पाया है इस उत्तम सुखरूपी फल का कोई हेतु नहीं है। इसी प्रकार दुःख फल का भी कोई कारण नहीं है। अतः इस सुख तथा दुःखरूपी अभ्यागम (प्राप्ति) अकृत अर्थात् विना कुछ किये प्राप्त हुआ है, यह मानना होगा। परन्तु –'कर्मफल सिद्धान्त' में 'कृतहानि' और 'अकृताभ्यागम' दोष नहीं होता।"

ईश्वर में वैषम्य एवं नैर्घृण्य दोष– इसी प्रकार पूर्वजन्म न मानने पर ईश्वर में वैषम्य तथा नैर्घृण्य दोष मानने पड़ेंगे जो ठीक नहीं है। क्योंकि यह विषम सृष्टि जीव–कर्म–सापेक्ष है। जो जीव जैसे कर्म करता है वैसे ही फल प्राप्त करता है। अतः ईश्वर वैषम्य तथा नैर्घृण्य दोषों से युक्त नहीं है।

इस जन्म में हमने जिस प्रकार दूसरे को सुख–दुःख, हानि–लाभ पहुँचाया है उसका उसी प्रकार अगले जन्म में बिना शरीर धारण किये हमें फल प्राप्त नहीं हो सकता।

पूर्वजन्म के पाप–पुण्य के विना इस जन्म में सुख–दुःख की प्राप्ति मानने से ईश्वर अन्यायकारी हो जाएगा, तथा हमारे पूर्वजन्म के कर्म का नाश हो गया यह मानना पड़ेगा। दोनों ही मन्तव्य कथमपि उचित नहीं हैं। अतः पूर्वजन्म नथा परजन्म का सिद्धान्त तर्क–समन्वित है। इस प्रकार पुर्नजन्म की सिद्धि में ऊपर दो प्रकार की युक्तियाँ दी गई हैं– (1) परमात्मा न्यायकारी है वह पूर्वजन्म के पाप–पुण्य के बिना सुख–दुःख नहीं दे सकता। (2) पूर्वजन्म के पाप–पुण्य के बिना उत्तम, मध्यम, अधम शरीर कभी नहीं मिल सकते । इस प्रकार इस जन्म के सुख–दुःख आदि को प्रत्यक्ष से अनुभव करके उसके कारण रूप में पूर्वजन्म के पाप–पुण्य का अनुमान किया जाता है।

अन्य दार्शनिक युक्तियाँ– अब हम भारतीय दर्शनकारों की कुछ अन्य युक्तियाँ उपस्थित करते हैं जो उन्होंने पुनर्जन्म की सिद्धि में दी हैं। (3) योगसूत्र तथा व्यास–भाष्य में बतलाया गया है कि जातमात्र कृमि को भी मृत्यु का भय दिखलाई देता है। यदि पूर्वजन्म में मृत्यु का अनुभव न होता तो उसका संस्कार भी न होता। संस्कार के बिना स्मृति भी न होती और मृत्यु के स्मरण के बिना मृत्यु से भय भी न लगता। अतः प्राणी मात्र को जो मृत्यु से भय होता है उससे पुनर्जन्म का अनुमान किया जाता है।

(4) बालक को जन्म के समय जो हर्ष, शोक, भय आदि अनुभूतियाँ होती हैं, उसका कारण पूर्वजन्म है। बालक कभी सोते–सोते हँसता है, कभी दुःखी होता है, कभी डर जाता है, इस हर्ष आदि का कारण इस जन्म का अनुभव नहीं है। इस जन्म में बालक ने कोई अनुभव प्राप्त नहीं किया, अतः ये स्मृतियाँ पूर्वजन्मों के अभ्यास के कारण होती हैं। यह कहना ठीक नहीं होगा कि जैसे कमल आदि में विकास और संकोच होते हैं, ऐसे ही शिशु भी अकारण ही हँसता, रोता है। क्योंकि कमल आदि के विकास– संकोच उष्णता के होने न होने पर निर्भर है, अतः उस संकोच, विकास के निमित्तत्व उष्णता है। इसी प्रकार हर्ष आदि भी बिना निमित्त के नहीं हो सकते। पूर्वजन्म के अभ्यास के अतिरिक्त और कोई निमित्त हर्ष आदि का नहीं है, इसलिए यहाँ पूर्वजन्म का अभ्यास ही निमित्त मानना पड़ेगा। उत्पन्न होते ही बालक को जो दूध पीने की इच्छा होती है, उसका कारण भी पूर्वजन्म का आहाराभ्यास ही है। क्योंकि इस जन्म में नवजात शिशु को अन्य कोई आहार प्राप्त नहीं हुआ इससे पूर्वजन्म का अनुमान होता है। यदि ऐसा कहा जाए कि जिस प्रकार चुम्बक लोहे की ओर खिंचता है तो मिट्टी के ढेले की ओर क्यों नहीं खिंचता ? अतः लोहे के चुम्बक की ओर खिंचने का निमित्त चुम्बक की आकर्षण शक्ति है। इसी प्रकार बालक की दुग्धपानेच्छा का निमित्त भी पूर्वजन्म का आहारभ्यास है।

पूर्वजन्म को भूलने के कारण–

1. जीव अल्पज्ञ है, त्रिकालदर्शी नहीं इसलिए इसे पूर्वजन्म का स्मरण नहीं रहता।

2. जिस मन से जीव ज्ञान प्राप्त करता है, वह मन एक समय में दो ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता– 'युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिंगम्' (न्याय दर्शन 1। 1। 26) अर्थात्– जिससे एक काल में दो पदार्थो का ज्ञान ग्रहण नहीं होता, उसको मन कहते हैं।

3. (1) पूर्वजन्म की कौन कहे इसी जन्म में जब गर्भावस्था में जीव था उस समय की कोई बात स्मरण नहीं रहती।

(2) पाँच वर्ष की अवस्था से पूर्व की बातों का स्मरण नहीं रहता।

(3) जागृत या स्वप्नावस्था के बहुत से व्यवहार सुषुप्ति या गाढ़निद्रा में स्मृत नहीं रहते।

(4) यदि किसी से यह पूछ दिया जाए कि आज से बारह वर्ष पूर्व 13वें वर्ष के पाँचवें महीने के नवें दिन दस बजकर 1मिनट पर तुमने क्या किया था? उस समय तुम्हारा मुख, हाथ, कान, आँख शरीर किस ओर किस प्रकार था तो वह कुछ बता नहीं सकता।

जब इसी जन्म में इस शरीर की यह दशा है, तब बालकपन ही माना जाएगा यह कहना कि पूर्वजन्म की बातों के स्मरण न रहने से पूर्वजन्म सिद्ध नहीं हो सकता। इससे यह सिद्ध हुआ कि पूर्वजन्म की सिद्धि में पूर्वजन्म का स्मरण न रहना बाधक नहीं हैं।

(5) यदि कोई पूर्वजन्म की बातों का स्मरण करना चाहे तो भी नहीं जान सकता क्योंकि जीव का ज्ञान और स्वरूप अल्प है। यह बात ईश्वर के जानने योग्य है, जीव के नहीं।

(6) जीव का कल्याण इसी में है कि वह पूर्वजन्मों के दुःखों को देख–देख (सोच–सोचकर) दुःखित होकर मर जाता।

(7) योगभाष्य 3। 18। में यह मत व्यक्त किया गया है कि–"संस्कारों का साक्षात् करने से पूर्वजन्म का ज्ञान हो जाता है। अतः देश, काल तथा निमित्त के साक्षात्कार के बिना संस्कार का साक्षात् नहीं हो सकता। अतः संस्कार के साक्षात्कार द्वारा योगियों को पूर्वजन्म का ज्ञान उत्पन्न होता है।"

पूर्वजन्म–सिद्धान्त के लाभ–

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पुनर्जन्म या पूर्वजन्म के सिद्धान्त के ऊपर होनेवाले अन्य आक्षेपों का समाधान तथा इस सिद्धान्त के लाभों को भी 'सत्यार्थप्रकाश' में विवृत किया है। स्वामीजी के तर्कपुरस्सर विश्लेषण को हम अपने शब्दों में व्याख्यान करके प्रस्तुत कर रहे हैं–

प्रश्न– जब जीव को पूर्वजन्म के कर्मो का स्मरण नहीं है तब उन विस्मृत कर्मो का फल परमेश्वर क्यों देता है? इससे जीव का सुधार नहीं हो सकता। जीव को दिये जानेवाले दण्ड का कारण ज्ञात होना चाहिए।

उत्तर– ज्ञान के आठ प्रकार होते हैं। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव इन आठ प्रमाणों द्वारा ज्ञान की प्राप्ति होती है। पूर्वजन्म की सिद्धि 'अनुमान' प्रमाण से होती है। जिस प्रकार वैद्य अपने रोग का कारण (निदान) जान लेता है क्योंकि वह वैद्यकशास्त्र का ज्ञाता है। उसी प्रकार एक सामान्य व्यक्ति भी (अवैद्य) अपने ज्वर आदि रोग का कारण इतना तो जान ही लेता है कि मुझसे कुपथ्य हो गया है। इसी प्रकार मनुष्यों को भी अपने–अपने जीवन में समय–समय पर प्राप्त राज्य, धन बुद्धि, विद्या, दारिद्रय, निर्बुद्धि, मूर्खता आदि सुख–दुःख को देखकर 'पूर्वजन्म'का अनुमान कर लेना चाहिए। इस जगत् या संसार में विचित्र प्रकार के सुख तथा दुःख की न्यूनता या अधिकता को देखकर पूर्वजन्म का अनुमान अवश्य करना चाहिए।

पूर्वजन्म के न मानने पर ईश्वर पक्षपाती हो जाएगा क्योंकि उसकी सृष्टि में कोई दारिद्रय आदि दुःख प्राप्त कर रहा है तो कोई राज्य आदि सुख प्राप्त कर रहा है। बिना पूर्व सञ्चित पाप–पुण्य के इस दारिद्रय तथा धनाढयता, बुद्धि–वैभव और निर्बुद्धिता का हेतु क्या है? पूर्वजन्म के अनुसार दुःख सुख देने से परमेश्वर न्यायकारी सिद्ध होता है। इसी आधार पर स्वामीजी ने पुनर्जन्म न माननेवाले ईसाई तथा इस्लाम मतों की कड़ी समीक्षा की है।

ईसाई और इस्लाम– 'अब मुस्लामान लोग पूर्वजन्म और पूर्वकृत पाप–पुण्य नहीं मानते तो किन्हीं पर निआमत अर्थात् फ़जल या दया करने और किन्हीं पर न करने से खुदा पक्षपाती हो जाएगा। क्योंकि बिना पाप–पुण्य के सुख–दुःख देना केवल अन्याय की बात है। जब उनके पूर्वसंचित पुण्य–पाप ही नहीं, तो किसी पर दया और किसी पर क्रोध करना नहीं हो सकता। आदम हव्वा और

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

युवाओं व देशभक्तों के आदर्श, वीरता व शौर्य की मूर्ति

स्वदेश प्रेम, स्वधर्म–संस्कृति की रक्षा के अनुपम उदाहरण महाराणा प्रताप

● मनमोहन कुमार आर्य

महाराणा प्रताप एक दिव्य, ओजस्वी, तेजस्वी, साहसी, निर्भीक, देश–धर्म–संस्कृति प्रेमी, चरित्र के धनी व अद्वितीय बलवान पुरुष थे। उनका देश, धर्म व संस्कृतिके प्रति प्रेम जगजाहिर है। मातृभूमि के प्रति इस प्रेम के लिए ही उन्होंने अपने प्राणों व कुटुम्बियों के हितों का मोह भी त्याग दिया था। वह वेदों की सूक्ति **"माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या:"** अर्थात् स्वदेश–भूमि मेरी माता है और मैं इसका योग्यतम पुत्र हूँ, के मूर्तरूप थे। भारत वर्ष ही नहीं संसार के इतिहास में उनका नाम सदैव अमर रहेगा। वह राष्ट्रभक्ति व राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक हैं। मातृभूमि, भारतमाता व स्वदेश भक्ति की भावनाओं से वह पूरित थे तथा मातृभूमि की स्वतन्त्रता व अखण्डता के लिए वह आत्मोत्कर्ष की भावना से भरे हुए आशावादी व जीवन्त पुरूष थे। उन्होंने स्वदेश भक्ति व स्वतन्त्रता के लिए अभाव, कष्टों व दुःखों का जीवन व्यतीत करना सहर्ष स्वीकार किया परन्तु विधर्मी, अभिमानी, दूसरों की स्वतन्त्रता का घात करने वाले, उन्हें गुलाम बनाने की मनोवृत्ति पालने वाले, शोषण व अन्याय निर्दोष, निरीह, निर्बल प्रजा के धर्म व अस्मिता का हरण करने वाले राजाओं, उनके सिपहसलारों व शत्रुओं के सामने झुकना स्वीकार नहीं किया। वह वैदिक राजपूती आन, बान व शान के पुरस्कर्ता, रक्षक व उन्नायक थे। महाराणा प्रताप देशभक्ति, देशसेवा, देशप्रेम, देश के लिए जीना व देश के लिए ही मरना व मिटना, **'तेरा वैभव अमर रहे मां, हम दिन चार रहें न रहें'** की भावना के उज्ज्वल विचारों के सम्वाहक थे। यदि देश की बाल व युवा पीढ़ी उनके जीवन पर शुद्ध व पवित्र मन से विचार करे तो वह अपने जीवन के सत्य लक्ष्य का मार्ग प्रदर्शित करने वाली जीवन शैली, वैदिक जीवन शैली, को अपनाकर स्वजीवन के उत्सर्ग व उसे सफलता की ओर अग्रसर कर सकते हैं। उस वीर, महापुरुष, राष्ट्रीय आदर्श, देश के गौरव को शतशः प्रणाम।

राष्ट्रनायक महाराणा प्रताप का जन्म 31 मई, सन् 1540 को राजस्थान के पाली शहर के महान योद्धा महाराणा उदय सिंह के यहां हुआ था। राजपूत राजाओं में आप श्रेष्ठ राजा माने जाते थे। आपके दो छोटे भाई जगमाल और शक्तिसिंह थे। भाईयों ने आपके सामने कई बार समस्याएँ खड़ी कीं परन्तु आपने सदा उनको अभयदान दिया। मातृभूमि व उसके लिए कुछ भी करने का जज्बा, यहां तक की मृत्यु का आलिंगन करने की भावना भी आपमें गहराई तक भरी हुई थी। वीरता, शौर्य व साहस में आप के समान राजपूताना में दूसरा योद्धा शायद नहीं हुआ। **चित्तौड़गढ़, मांडलगढ़ और कुंभल गढ़ के दुर्ग आपके पिता के आधिपत्य में थे।** अकबर कूटनीति का पण्डित कहा जा सकता है। वह अपने व दादा बाबर के ही समान था परन्तु उसका बाह्य रूप सर्वधर्म समभाव का था। उसने राजपूतों में फूट डाली। राजपूतों का एक वर्ग उसके साथ हो लिया। इस वर्ग ने अपना हानि–लाभ का अनुमान लगाया। उन्हें लगा कि वह यदि अकबर को अपना अधिनायक नहीं मानेंगे तो उनका व उनकी प्रजा का अस्तित्व व भविष्य बचा पाना असम्भव है। राजा मान सिंह की बुआ जोधा बाई का अकबर से विवाह अपने अस्तित्व व प्रजा की रक्षा के लिए ही किया गया था। यही नहीं, मानसिंह व उसके साथी अनेक राजपूत भी अकबर की सेना में सम्मिलित हुए और अकबर ने उनका उपयोग महाराणा प्रताप के विरूद्ध किया। महाराणा प्रताप के लिए अकबर की सेना से युद्ध करना इस कारण सदैव दुःख से पूर्ण रहा कि उसे अकबर के विरुद्ध लड़े गये अपने सभी युद्ध अकबर की सेना के अपने राजपूत बन्धुओं के विरूद्ध ही लड़ने पड़े जहां दोनों तरफ से बड़ी संख्या में राजपूत मारे गये। **अपनी मातृभूमि, स्वदेश व स्वसंस्कृति की रक्षा ही उनका मुख्य प्रयोजन था जो उनका जन्मसिद्ध अधिकार था।** महाराणा प्रताप के पिता उदयसिंह को भी अपने जीवन काल में अकबर के विरूद्ध लड़ाई लड़नी पड़ी थी। राजपूतों के बड़ी संख्या में अकबर की तलवार के सामने घुटने टेक देने के कारण व राजपूतों में परस्पर एकता व बन्धुता के भाव की कमी के कारण राजपूतों की शक्ति कमजोर हुई वहीं राजपूतों के द्वारा अकबर को सहयोग देने से उसकी शक्ति में भारी वृद्धि हुई। महाराणा उदयसिंह तथा महाराणा प्रताप की सेना की संख्या अकबर की सेना से एक चौथाई से भी कम थी, हथियार भी अच्छे नहीं थे, तोपें यदि तो थी हीं नहीं, अतः दोनों सेनाओं का आपस में कोई सन्तुलन नहीं था। इस पर भी महाराणा प्रताप के सैनिकों के हौंसले बुलन्द थे। वह मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देने की भावना से ओतप्रोत थे। यही जज्बा अकबर के मार्ग में बाधा पहुंचाता था।

पहली बार अकबर ने चित्तौड़ गढ़ को जीता तो उसका कारण महाराणा प्रताप के पिता महाराणा उदय सिंह का अकबर को अधिनायक व उनका व स्वीकार न करना था। 5 से 6 महीने की अवधि तक युद्ध हुआ, परिणाम वही हुआ जो एक शक्तिशाली व एक निर्बल सेना के बीच होने वाले युद्ध का होता है। महाराणा उदय सिंह की सैन्य शक्ति अकबर की सेना से बहुत ही कम थी। इस युद्ध में इतना अच्छा रहा कि उदयसिंह अपने परिवार के सदस्यों सहित युद्ध के मैदान से सुरक्षित भागने में सफल हो गये जिससे अगले युद्ध की भूमिका तैयार हो सकी। कालान्तर अप्रैल सन् 1576 में अकबर की सेना ने उनके पुत्र सलीम के नेतृत्व में तथा मानसिंह और महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह के सहयोग से महाराणा प्रताप के मांडल गढ़ के किले पर आक्रमण किया। यह युद्ध हल्दी घाटी के युद्ध के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। इसमें महाराणा प्रताप व उनके सैनिक वीरता से लड़े। उनके पास तोपें नहीं थीं। संख्या भी मुगल सेना से बहुत कम थी। इन तोपों ने महाराणा प्रताप की सेना को भारी हानि पहुंचाई। युद्ध में उनकी लगभग 14,000 सेना ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। महाराणा प्रताप के घायल होने पर उनके मामा ने उन्हें युद्ध भूमि छोड़ने को विवश किया। जीवन में उन्हें सबसे प्रिय उनका चेतक उनके जीवन की रक्षा करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुआ। अकबर की सेना का नेतृत्व कर रहे उनके छोटे भाई शक्ति सिंह को भातृ प्रेम व जाति प्रेम अचानक उमड़ पड़ा। उसने अकबर का साथ छोड़ कर भाई की जान बचाई। उन्हें बन्दी बना लिया गया। इस युद्ध में मांडल गढ़ का किला महाराणा प्रताप के हाथ से निकल गया।

परिस्थितियां ऐसी बनी कि महाराणा प्रताप को भामाशाह जैसे सर्वस्व दानी मिल गये जिन्होंने अपनी अथाह दौलत महाराणा प्रताप के चरणों मे समर्पित कर दी। भाई शक्ति सिंह ने भी इन दिनों अपनी सेना का गठन कर लिया था, वह भी महाराणा प्रताप को समर्पित कर दी। अकबर का एक वफादार राजपूत सैनिक पृथिवीराज चौहान भी आकर महाराणा प्रताप से मिल गया और उन्हें अकबर के विरूद्ध युद्ध करने की प्रार्थना की। पहली सफलता महाराणा प्रताप को कुमलमेर के किले को प्राप्त कर प्राप्त हुई। युद्ध का दूसरा केन्द्र शक्तिसिंह का 'किम सहारा' किला था जहां मानसिंह ने महावत खां के नेतृत्व में 10,000 की फौज भेजकर आक्रमण किया। इस युद्ध में महाराणा प्रताप ने अपने भाई शक्तिसिंह का साथ दिया। यहां मुगल सेना पराजित हो गई। महाराणा प्रताप ने कुम्भल–गढ़ के अपने किले को जो अकबर के कृपा पात्रों के अधीन था, आक्रमण कर उसे भी अपने अधीन कर लिया। इस प्रकार महाराणा प्रताप विजय अभियान की ओर अग्रसर थे। अकबर और महाराणा प्रताप के बीच बार–बार के युद्धों का परिणाम यह हुआ कि अकबर की सेना के राजपूतों की सहानुभूति महाराणा प्रताप के प्रति हो गई। इसका कारण महाराणा प्रताप की देशभक्ति व राजपूतों की आन–बान व शान की रक्षा करना ही था। इससे अकबर को राजपूतों की ओर से बगावत की सम्भावना दिखाई देने लगी। मानसिंह से विचार–विमर्श करने पर भी उसने वास्तविक स्थिति अकबर के सम्मुख रखी जिससे अकबर को विवश होकर अपनी नीति को बदलना पड़ा। महाराणा प्रताप को वह अपनी सल्तनत

शेष पृष्ठ 11 पर

महाराणा प्रताप ने जो युद्ध लड़े उसमें उनके अनेक साथी व परिवारजन मृत्यु को प्राप्त होते रहे। उनकी अपनी मृत्यु का समय निकट आ जाने पर वह चिन्तित अवस्था में थे। इसका कारण था कि उनका पुत्र अमरसिंह स्वदेश की रक्षा के योग्य नही था। उनके छोटे भाई शक्तिसिंह ने उन्हें आश्वस्त किया कि वह उनके स्वप्न को साकार करेगा और उसके लिए स्वयं को मातृभूमि की सेवा में अर्पित रखेगा। इस आश्वासन के मिल जाने पर महाराणा प्रताप ने अपने बन्धुओं की उपस्थिति में 29 जनवरी, 1597 ई. को अपने प्राण त्यागे। उनका जीवन व उनके वीरता, साहस व शौर्य पूर्ण कार्य भावी पीढ़ी की धरोहर बन गये। उन्होंने देश भक्ति की जो मिसाल कायम की है, उसके लिए उनका नाम भारत के इतिहास में सदैव अमर रहेगा और लोग उनसे प्रेरणा लेते रहेंगे।

thearyasamaj.org

अथर्ववेद में चन्द्रमा

● शिव नारायण उपाध्याय

अथर्ववेद में सृष्टि की संरचना का विस्तारपूर्वक वर्णन हुआ है। उसमें पृथ्वी के निकटस्थ चन्द्रमा का भी अच्छा वर्णन हुआ है। अथर्ववेद में वर्णन है कि सूर्य और चन्द्रमा आकाश में आगे पीछे दिखाई देते हैं, वे ऐसे लगते हैं माना दो शिशु खेल रहे हों। उनमें से चन्द्रमा के कारण ही कृष्ण एवं शुक्ल पक्ष बनते हैं।

पूर्वापरं चरतो मापयैतौ शिशु क्रीडन्तौ परि यातोऽर्णवम्।

विश्वान्यो भुवना विचष्ट ऋतूँरन्यो विदधज्जायसे नवः।। अथर्व. 7.81.1

पदार्थ– (एतौ) यह दोनों (सूर्य और चन्द्रमा) (पूर्वपरम्) आगे पीछे (मायया) बुद्धि से (ईश्वर नियम से) (चरतः) विचरते हैं। (क्रीडन्तौ) खेलते हुए (शिशु) दो बालकों के समान जैसे (अर्णवम्) अन्तरिक्ष में (परि) चारों ओर (यातः) चलते हैं। (अन्य) एक (सूर्य) (विश्वा) सब (भुवना) भुवनों को (विचष्टे) देखता है, (अन्यः) दूसरा तू (चन्द्रमा) (ऋतून्) ऋतुओं को (अपनी गति से) (विदधत्) बनाता हुआ (शुक्ल पक्ष में) (नवः) नवीन (जायसे) प्रकट होता है।

सूर्य और चन्द्रमा ईश्वरीय नियम से आकाश में घूमते हैं। सूर्य चन्द्रमा सहित ग्रहों को प्रकाश पहुंचाता है। चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में प्रतिदिन 1/15 भाग बढ़ता जाता है और पूर्णिमा के दिन पूरा हो जाता है फिर कृष्ण पक्ष में प्रतिदिन 1/15 भाग घटता जाता है अैर अमावस्या को सम्पूर्ण चन्द्रमा छिप जाता है। इसे वेद में इस प्रकार कहा है–

नवो नवो भवसि जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेष्यग्रम्।

भागं देवेभ्यो वि दधा स्यायन् प्रचन्द्रमस्तिरसे दीर्घमायुः।। अथर्व.7.81.2

पदार्थ– (चन्द्रमा) हे चन्द्रमा। तू शुक्ल पक्ष में (नवो नवः) नया नया (जया मानः) प्रकट होता हुआ (भवसि) रहता है और (अह्नाम्) दिनों का (केतुः) जताने वाला तू (उषसाम्) उषाओं (प्रभात वेलाओं) के (अग्रम्) आगे (एषि) चलता है और (आयन्) आता हुआ तू (देवेभ्यः) उत्तम पदार्थों को (भागम्) सेवनीय उत्तम गुण (वि दधासि) विचित्र प्रकार देता है और (दीर्घम्) लम्बे (आयुः) जीवन काल को (प्र) अच्छे प्रकार (तिरसे) पार लगाता है।

भावार्थ– चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में एक कला (1/15 भाग) बढ़कर नया दिखाई देता है उसी से प्रतिपदा, द्वितीया आदि तिथियां बनती है। चन्द्रमा पृथ्वी के पदार्थों में जीवन शक्ति देकर पुष्टि कारक होता है। फलों में मधुर रस की भरता है।

चन्द्रमा को अमृत बांटने वाला कहा जाता है।

सोमस्यां शो युधां पते ऽ नू नो नाम वा असि।

अनूनं दर्श मा कृधि प्रजया च धनेन च।। अथर्व.7.81.3

पदार्थ– (सोमस्य) हे अमृत के (अंशो) बांटने वाले। (युधाम्) हे युद्धों के (पते) स्वामी। (वै) निश्चय करके तू (अनूनः) न्यूनता रहित (सम्पूर्ण) (नाम) प्रसिद्ध (असि) है। (दर्श) हे दर्शनीय। (मा) मुझको (प्रजया) प्रजा से (च च) औश्र (धनेन) धन से (अनूनम्) सम्पूर्ण (कृधि) कर।

भावार्थ– पूर्ण चन्द्रमा को अमृत बांटने वाला इसलिए कहा गया है कि उसकी किरणों से पार्थिव पदार्थों और प्राणियों में पोषक शक्ति पहुंचती है। उसे युद्ध का स्वामी इसलिए कहा गया है कि पौर्णमासी को पार्थिव समुद्र का जल चन्द्रमा की ओर ऊपर उठता है।

ग्रह और तारा गणों के परस्पर निकट हो जाने अथवा टकरा जाने का काल चन्द्रमा की गति से निर्णय किया जाता है।

दर्शोऽसि दर्शतोऽसि समग्रोऽसि समन्तः।

समग्रः समन्तो भूयासं गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन। अथर्व.7.81.4

पदार्थ– (हे चन्द्रमा) तू (दर्शः) दर्शनीय (असि) है, (दर्शतः) देखने का साधन, (असि) है, (समग्रः) सम्पूर्ण गुण वाला और (समन्तः) सम्पूर्ण कला वाला (असि) है। (गोभिः) गौओं से (अश्वैः) घोड़ों से (पशुभिः) अन्य पशुओं से (समन्त) परिपूर्ण (भूयासम्) मैं रहूँ।

भावार्थ– वास्तव में चन्द्रमा रात्रि के समय आकाश में देखने योग्य होता है। बिना चन्द्रमा के प्रकाश के रात्रि में ठीक तरह से देख पाना असंभव है। चन्द्रमा प्राणियों की आयु में वृद्धि करता है।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तस्य त्वं प्यायस्व।

आ वयं प्याशिषीमहि गोभिरश्वैः प्रजयाः पशुभिर्गृहैर्धनेन।। अथर्व.7.81.5

पदार्थ– (यः) जो मनुष्य (अस्मान्) हम से (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम (द्विष्मः) विरोध करते हैं (त्वम्) तू (हे चन्द्र) (तस्य) उसको (प्राणेन) प्राण से (आप्यायस्व) वियुक्त कर (वयम्) हम लाग (गोभिः) गौओं से (अश्वैः) घोड़ों से (पशुभिः) हाथी, भैंस, बकरी आदि पशुओं से (प्रजया) सन्तान, भृत्य आदि से (गृहैः) घरो से और (धनेन) धन से (आ) सब प्रकार (प्याशिषीमहि) बढ़े। अन्तिम मंत्र में बताया गया है कि जैसे जिस नियम से सूर्य की किरणें चन्द्रमा के अनिष्ट रस को खींच कर अमृत उत्पन्न करती है वैसे ही राजा आदि गुरूजन प्रजा के दुःखों को नष्ट कर उन्हें सुख सम्पन्न करें।

यं देवा अंशुमाप्याययन्ति यमक्षितमाक्षिता भक्षयन्ति।

तेना स्मानिन्द्रो वरूणो बृहस्पतिराप्याययन्तु भुवनस्य गोपाः।। अथर्व.7.81.6

पदार्थ– (यम्) जिस (अंशुम्) अमृत को (देवाः) प्रकाशमान सूर्य की किरणें (शुक्ल पक्ष में) (आप्याययन्ति) बढ़ा देती हैं और (यम्) जिस (अक्षितम) बिना घटे हुए को (अक्षिताः) वे व्यापक (किरणें) (भक्षयन्ति) (कृष्णपक्ष में) खा लेती हैं। (तेन) उसी नियम से (अस्मान्) हमको (भुवनस्य) संसार के (गोपाः) रक्षा करने वाला (इन्द्रः) परम ऐश्वर्यमान् राजा (वरूणः) श्रेष्ठ वैद्य और (बृहस्पतिः) बड़ी विद्याओं का स्वामी आचार्य (आ) सब प्रकार (प्याययन्तु) बढ़ावें। इति।

73, शास्त्री नगर दादाबाड़ी
कोटा (राजस्थान) 324009

भरूच में शांति और आनंद का वैदिक मार्ग बताया–स्वामी शांतानंद जी ने

गुजरात के प्रसिद्ध भरूच आर्य समाज के १२२ वें स्थापना दिन के उत्सव में **श्री स्वामी शांतानंद जी सरवस्ती** (आचार्य श्री संत ओधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर, कच्छ) को आमंत्रित किया गया । आप पू. स्वामी सत्यपित जी द्वारा स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ के सुयोग्य स्नातक एवं योगाभ्यासी हैं।

भरूच के विश्वकर्मा भवन में आपके दो प्रवचन हुए। प्रथम प्रवचन का विषय था – **वैदिक तत्त्वज्ञान का सरल परिचय।** विद्वान् दर्शनाचार्य स्वामी शांतानंद जी ने ईश्वर, जीव और प्रकृति इन तीन अनादि मूल सत्ताओं के स्वरूप का वर्णन किया और ईश्वर का महत्त्व समझाया । स्वामी जी की प्रवचन शैली सरल व स्वाभाविक है, जो श्रोताओं के हृदय को सहजता से प्रभावित करती है । आपने ऋग्वेद के सुप्रसिद्ध मंत्र **द्वासुपर्णा सयुजा सखाया** – की विस्तृत व्याख्या की और बताया कि अगर पुनर्जन्म मनुष्य रूप में प्राप्त करने के इच्छा हो तो व्यक्ति को पंचमहायज्ञ तथा स्वाध्याय–सत्संग का पालन एवं दर्गुण, दुर्व्यसन आदि का त्याग करना अनिवार्य है । ईश्वर न्यायकारी है। अतः हमें ऐसे कर्म करने चाहिएँ जिनसे हम मनुष्य जन्म पाने के अधिकारी बन सकें। अन्यथा पशु, पक्षी आदि निम्न योनियों में जाना निश्चित ही है। उन्होंने कहा कि मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य तो मुक्ति या मोक्ष की प्राप्ति ही होना चाहिए।

सायंकालीन सत्र का विषय था – **'ईश्वर प्राप्ति का मार्ग योगाभ्यास'** जिसमें स्वामी शातानंद जी ने महर्षि पतंजलि के द्वारा निर्दिष्ट अष्टांग योग को अपने प्रवचन का आधार बनाया और योग के आठों अंगों की क्रमशः व्याख्या की। आपने योग तथा उपासना की सफलता के लिए मुख्यतः यम और नियमों का पालन करने की बात पर जोर दिया और ईश्वर को कैसे अपने दिनभर के कार्य कलापों के दौरान सतत याद किया जा सकता है, कैसे उसकी विद्यमानता की निरंतर अनुभूति की जा सकती है, उस संबंध में श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। स्वामी जी ने जप करने की वैदिक पद्धति का विशद रूप में वर्णन किया और ओम्, आनंद आदि नामों से तथा गायत्री मंत्र आदि से कैसे जप किया जाता है, कैसे जप में प्रयुक्त नाम, मंत्र या वाक्य का अर्थ चिंतन किया जाता है – इत्यादि अत्यंत महत्त्वपूर्ण बातें सरल भाषा में प्रस्तुत कीं शम, दम, तितिक्षा आदि षड् संपत्ति का स्वरूप बता मुमुक्षुत्व कैसा होता है, यह उदाहरण सहित समझाया। इस प्रवचन से जिज्ञासु श्रोताओं को वास्तव में योग एवं उपासना का मूल्य ठीक से समझ में आ गया। प्रवचनों के अंत में श्रोताओं की कई शंकाओं का सम्यक् समाधान भी प्रस्तुत किए गये। इस अवसर पर संध्या, यज्ञ और भजन के कार्यक्रम भी हुए। आर्य समाज की ओर से विपुल मात्रा में वैदिक साहित्य उदारता पूर्वक निःशुल्क बांटा गया। अंत में सहभोजन कर कार्यक्रम को समाप्त किया गया।

प्रस्तुतिः
भावेश मेरजा, 8/17 टाउनशिप, पो.,
नर्मदानगर, भरूच, गुजरात–392015

thearyasamaj.org

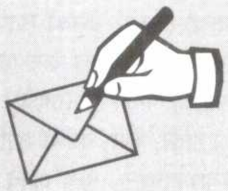

पत्र/कविता

आर्य समाज के दस नियम

(काव्य अनुवाद)

सत्य और पदार्थ विद्या, ईश्वर आदि मूल।
सत्य को धारण करो, असत्य को जाओ भूल।।

सच्चिदानन्द स्वरूप है, निराकार शक्तिमान।
दयालु, अजन्मा, न्यायकारी, अनादि, सर्वाधार।।

अजर, अमर, अभय, अनुपम, सृष्टि का करतार।
नित्यपवित्र, सर्वेश्वर, अनन्त, निर्विकार।

सर्वव्यापक आप हो, सबके अंतर्यामी।
आपकी उपासना करते सारे ज्ञानी।।

वेद को पढ़ो पढ़ाओ, सुनो और सुनाओ।
सत्य विद्या का पुस्तक है, परम कर्तव्य निभाओ।।

अविद्या नाश के लिये, विद्या वृद्धि अनिवार्य।
विद्या प्रचार के लिए, करते रहना कार्य।।

धर्मानुसार प्रीति से, यथायोग्य व्यवहार।
करो कार्य धर्मानुसार, सत्य असत्य विचार।।

शरीर आत्मा औ, समाज की, उन्नति का विचार।
आर्य समाज ध्येय है, दुनिया का उपकार।।

निज उन्नति स्वार्थ से, कैसे चले संसार।
सबकी उन्नति हो जिसमें, ऐसा करो विचार।।

सर्वहितकारी नियम पालना, सदा रहो परतंत्र।
हर हितकारी नियम पालना, रहो सदा स्वतंत्र।।

आर्य समाज के दस नियम, जीवन का हैं मंत्र।
पालन कर मानव बनो, सच्चे और पवित्र।।

नीरा खुराना अध्यक्षा, रसायन विभाग
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पटियाला

वर्तमान में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से शिक्षित युवक-युवतियों के वैवाहिक संबन्धों की महती आवश्यकता

वैदिक परम्परा में विवाह को एक महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है जिसका उद्देश्य समाज तथा राष्ट्र का विकास करना है। विवाह में जिन मूलभूत तत्वों को महत्व दिया जाता है। उन तत्वों के आधार पर ही देश का सामाजिक व सांस्कृतिक विकास होता है।

वैदिक धर्म के अनुसार विवाह उन्हीं का होना चाहिए जिनके गुण कर्म और स्वभाव सदृश हों तथा जिन्होंने विवाह के लिए वेदों का अध्ययन, विद्या ग्रहण, युवावस्था, ब्रह्मचर्य का पालन, विवाह से पूर्व गुरु की विधिवत अनुमति तथा कर्म के आधार पर वर्ण का चयन आदि आवश्यक योग्यताएं पूर्ण कर ली हो।

विवाह की इन सभी आवश्यक योग्यताओं में से अधिकांश का सीधा संबंध वर या वधु के आचार्य या गुरुकुल से है, क्योंकि आचार्य द्वारा समावर्तन में जो दीक्षांत उपदेश दिया जाता है वही व्यक्ति के गृहस्थ जीवन की आधार भूमि तैयार करता है। इसलिए आज भी जब-जब व्यक्ति के चरित्र प्रमाण पत्र की आवश्यकता होती है तो जिस शिक्षण संस्थान में उसने अध्ययन किया है उसके चरित्र प्रमाण पत्र को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है।

व्यक्ति के वर्ण के निर्धारण का अधिकार भी धर्मशास्त्रों ने गुरुकुल के आचार्य को ही प्रदान किया कि विवाह से पूर्व कन्याओं की सौलहवें वर्ष में और पुरुषों की पच्चीसवें वर्ष में परीक्षा कर वर्ण नियत करना चाहिए। जिससे समान वर्ण में विवाह किया जा सके।

आज भारत में हज़ारों युवक तथा युवतियां ब्रह्मचर्य पूर्वक वेदांग दर्शन आदि का अध्ययन कर रहे हैं , किन्तु उनके जीवन में आने वाली विवाहगत समस्याओं की ओर अभी भी आर्यसमाज के मनीषियों, विद्वानों तथा आचार्यों का ध्यान नहीं गया है। अध्ययन करने के उपरान्त उन हजारों ब्रह्मचारियों, ब्रह्मचारिणियों को विवाह के लिए उपयुक्त मंच न मिलने के कारण **परिस्थितिवश आर्य संस्कारों से बिल्कुल अपरिचित जीवन साथी से विवाह करना पड़ता है** जिसके फलस्वरूप वैचारिक साम्यता न होने के कारण वैवाहिक जीवन में समायोजन करना मुश्किल हो जाता है तथा वैवाहिक जीवन के द्वारा सांस्कृतिक विकास का लक्ष्य अधूरा रह जाता है।

लेखक का यह मानना है कि गुरूकुल में अध्ययन के उपरान्त इन स्नातक, स्नातिकाओं को एक ऐसा उपयुक्त मंच मिलना चाहिए, जिससे वे अपने योग्य वर या वधु का चयन कर सकें तथा अल्प परिश्रम से ही आर्य संस्कारों से युक्त परिवारों का निर्माण कर सकें। वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार का संकल्प लेकर जब से गुरूकुल के स्नातक, स्नातिकाएं समाज में आते हैं तो इनमें से अधिकतर का समय आर्य संस्कारों से अपरिचित अपने जीवन साथी को आर्य विचारधारा से जोड़ने से ही लग जाता है। और कालान्तर में समयाभाव व गृहस्थी के गुरुतरभार के कारण आर्य समाज के प्रचार प्रसार से दूर चले जाते हैं। खासतौर पर ब्रह्मचारिणियों को इस समस्या का सामना करना पड़ता है, क्योंकि पति प्रधान समाज के बंधन उन्हें स्वेच्छानुसार प्रचार कार्य से रोकते हैं।

अब समय आ गया है गुरूकुलों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को एक उचित अवसर व मंच प्रदान किया जाए कि वे भी अपने गुण कर्म स्वभाव के अनुरूप विवाह कर सकें। इतिहास साक्षी है कि विवाह संबंधों ने इतिहास की धाराओं को मोड़ दिया है। राष्ट्रों के भूगोल को बदल दिया है इसलिए सभी पक्षों को साथ लेकर गुरुकुल के स्नातक, स्नातिकाओं के लिये उचित वैवाहिक मंच प्रदान किया जाएँ जिनसे ऋषि के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के स्वप्न को साकार किया जा सके।

आचार्य अग्निमित्र
2-279, स्वामी विवेकानंद नगर
कोटा राजस्थान 324010
मो. 099295

****

क्या आप जानते हो?

1. लम्बे लम्बे नाखून बढ़ाना और उन पर नेल पालिश लगाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
2. स्टोव या गैस की नंगी लौ पर कौ. ई चीज भूनकर या सेककर खाना हानिकारक है। वस्तु में दुर्गन्ध भर जाती है।
3. चाय की पत्ती को बार-बार उबाल कर पीने से दाँत और आँत दोनों खराब हो जाते हैं।
4. धूम्रपान मद्यपान करना अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना है।
5. नाईलोन के चमकदार कपड़े पहनने से चर्म रोग होने की सम्भावना रहती है और यह आग को शीघ्र पकड़ते हैं।
6. माँस, मछली, अण्डे, चिकन मनुष्य का भोजन नहीं है। इनके खाने से शरीर में अनेक प्रकार के भयंकर रोग लग जाते हैं। यदि स्वस्थ निरोग रहना चा. हाते हो तो शुद्ध शकाहारी बनो।
7. ऊँची ऐडी के सेन्डल पहनकर चलने से सिर दर्द कमर दर्द होता है।

किसी को कोई शंका हो तो हमसे निम्न पते पर सम्पर्क करके समाधान कर सकता है।

देवराज आर्यमित्र
WZ-428 हरि नगर, नई दिल्ली 110064

****

thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 07 का शेष

पुनर्जन्म (आवागमन)

शैतान की कहानी बाईबिल तथा कुरआन दोनों में है तथा दोनों मतावलम्बी इस पर विश्वास करते हैं। स्वामीजी का प्रश्न है कि खुदा ने बिना अपराध के शैतान को पापी (अपराधी) क्यों बनाया, उक्त तीनों को खुदा ने शाप क्यों दिया? शैतान ने आदम या हव्वा को तो बहकाया नहीं अपितु सत्य बात कही। खुदा ने ही आदम और हव्वा को झूठ कहा कि इसके खाने से तुम मर जाओगे। और आदम के तथाकथित पापी होने से उसकी सन्तान पापी क्यों होगी?

प्रश्न– एक जन्म होने से भी परमात्मा न्यायकारी हो सकता है। सर्वोपरि राजा जो करे वही न्याय है। जिस प्रकार माली उपवन में छोटे–बड़े वृक्ष लगाता है। किसी को काटता–उखाड़ता और किसी की रक्षा करता या बढ़ाता है। अतः जिसकी जो वस्तु है, वह वस्तु उसकी मर्जी पर है। जैसा वह चाहे वैसा रक्खे। उसके (ईश्वर के) ऊपर दूसरा कोई न्याय करनेवाला नहीं है। जो उसको कोई दण्ड दे सके। अतः ईश्वर को किसी से डर नहीं है।

उत्तर– ईश्वर पूजनीय और सबसे बड़ा इसीलिए माना जाता है कि वह सबके प्रति पक्षपात रहित होकर न्याय करता है। जो न्याय विरूद्ध आचरण करे तो वह ईश्वर नहीं हो सकता। माली भी (युक्ति के बिना) मार्ग में या अस्थान में वृक्ष नहीं लगाता, न काटने योग्य वृक्ष को नहीं काटता। काटने योग्य वृक्ष को नहीं बढ़ाता। इसी प्रकार परमेश्वर भी युक्तिपूर्वक यथायोग्य न्याय करता है। बिना कारण के कार्य करने से ईश्वर दोषी हो जाएगा। अतः परमेश्वर के लिए न्याययुक्त कर्म ही करना आवश्यक है। क्योंकि वह स्वभाव से ही पवित्र और न्यायकारी है। उन्मत के समान कार्य करने और अन्याय करने वाले व्यक्ति की संसार में प्रतिष्ठा नहीं होती। अधर्माचरण करने वाले को छोड़ देने या प्रतिष्ठित करने से तथा धर्माचरण, अनिन्दित कार्य करने वाले व्यक्ति को (निरपराध को) दण्ड़ित करने से पुरस्कृत या दण्डित करने वाला व्यक्ति या न्यायाधीश समाज में अन्यायी माना जाता है। अतः ईश्वर न्याय करता है, अन्याय नहीं। तभी वह किसी से नहीं डरता।

प्रश्न– परमात्मा पहले ही विचार करके जिसको जितना सुख–दुःख देना होता है, दे देता है। इस संसार में बड़े–छोटे को एक–सा ही दुःख है। बड़ों को बड़ी चिन्ता तथा छोटों को छोटी। जैसे किसी साहूकार को लाख रूपये का मुकदमा हो और वह कचहरी जा रहा हो तो उसे बहुत चिन्ता होगी, हारने का भय होगा नाना प्रकार की शंकाएँ होंगी। किन्तु उसको पालकी में ले जा रहे कहार को उस मुकदमे के सम्बन्ध में कोई चिन्ता नहीं। इसी प्रकार राजा सुन्दर कोमल बिछौने पर सोता है पर उसको शीघ्र नींद नहीं आती। पर मजदूर कंकड़, पत्थर, मिट्टी पर सोते ही तुरन्त निद्रा के वशीभूत हो जाता है। ऐसे ही सभी जगह समझना चाहिए।

उत्तर– यह समझ अविद्वानों की है। यदि सभी का सुख–दुःख और साहूकार तथा कहार का सुख–दुःख बराबर है तो कहार क्यों साहूकार बनना चाहते हैं किन्तु साहूकार कभी कहार बनना नहीं चाहता। संसार में सभी जीवों में उच्चावच्च स्थिति है वैषम्य है, इससे इन्कार नहीं होना चाहिए। एक जीव विद्वान् बनता है। दूसरा पढ़ाने पर भी कुछ नहीं पढ़ पाता, मूर्ख रह जाता है। यह स्थिति एक ही माता–पिता के पुत्रों में होती है। एक राजा के घर जन्म लेता है। जन्म लेते ही सम्पूर्ण उत्तम व्यवस्था खान–पान, रहन–सहन की होती है। दूसरा महादरिद्र घसियारे के यहाँ जन्म लेकर दूध के लिए भी तरस जाता है। अभावों और कष्टों में जीता है, पलता है और लाख पुरूषार्थ करने पर सफल नहीं हो पाता, अभावों में ही मर जाता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि जीव बिना पूर्वजन्म के पाप–पुण्य के इस जन्म में विशेष सुख–दुःख प्राप्त नहीं कर सकता। अन्यथा परमेश्वर ही दोषी सिद्ध होगा।

पुनजन्म न मानने पर आपत्तियाँ– यदि बिना पूर्वजन्म के पाप–पुण्य के इस जन्म में सुख दुःख मिलते हैं तो अगले जन्म के सुख के लिये कोई पुण्य करने की आवश्यकता नहीं है। जिसे स्वर्ग–नरक या जन्नत और दोज़ख कहा जाता है उसके लिए कोई पुरूषार्थ करने को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। क्योंकि परमात्मा जिसे चाहेगा स्वर्ग भेज देगा जिसे नरक भेजना चाहेगा उसे नरक भेज देगा। फिर जीव इस जन्म में धर्म या पुण्यादि का कार्य क्यों करे ? क्योंकि धर्म का फल मिलने में सन्देह है। परमेश्वर के हाथ में ही सब कुछ है। यह मान्यता पापकर्मों में मनुष्य के भय को समाप्त कर देगी। तब पापकर्मों में भय न होने से संसार में पाप की वृद्धि तथा धर्म का क्षय हो जाएगा। इसलिए पूर्वजन्म के पुण्य–पाप के अनुसार वर्तमान जन्म, और वर्तमान तथा पूर्वजन्म के कर्मानुसार भविष्यत् के जन्म होते हैं, यही सिद्धान्त मनुष्यों के लिए हितकर तथा लाभप्रद है।

विशेष–यह महत्वपूर्ण बात है कि यद्यपि कतिपय दर्शनों ने एक दूसरे के सिद्धान्तों की कड़ी आलोचनाएँ की है। किन्तु चार्वाक को छोड़कर सभी भारतीय दर्शनों (जैन, बौद्ध तथा आस्तिक षड्दर्शनों) ने कर्म एवं पुनर्जन्म के सिद्धान्त को एक स्वर से स्वीकार किया है।

अतः 'धर्म और अधर्म' (पुण्य और पाप) के द्वारा वशीकृत जीव अनेकानेक योनियों में संसरण करता रहता है– "धर्माधर्म–वशीकृतो जीवस्तासु तासु योनिषु संसरति।"

☞ पृष्ठ 08 का शेष

'स्वदेश प्रेम, स्वधर्म–...

का लोहा ना मनवा सका, महाराणा प्रताप को वह अपने अधीन न कर सका, इससे वह दुखी था। इस विषम परिस्थिति में एक समझदार व चतुर राजनीतिज्ञ की भांति उसने स्थिति को अपने अनुकूल करने के लिए अपने पुत्र सलीम का राजा मानसिंह की बहिन से विवाह करने की घोषणा की। यह घोषणा भी कि महाराणा प्रताप से उनकी कोई शत्रुता नहीं है। जब तक वह जीवित हैं उन पर कोई हमला नहीं किया जाएगा। वह भी बताया जाता है कि अकबर ने सभी राजपूत राजाओं से हाथ जोड़कर अपनी गलती मानी।

महाराणा प्रताप ने जो युद्ध लड़े उसमें उनके अनेक साथी व परिवारजन मृत्यु को प्राप्त होते रहे। उनकी अपनी मृत्यु का समय निकट आ जाने पर वह चिन्तित अवस्था में थे। इसका कारण था कि उनका पुत्र अमरसिंह स्वदेश की रक्षा के योग्य नही था। उनके छोटे भाई शक्तिसिंह ने उन्हें आश्वस्त किया कि वह उनके स्वप्न को साकार करेगा और उसके लिए स्वयं को मातृभूमि की सेवा में अर्पित रखेगा। इस आश्वासन के मिल जाने पर महाराणा प्रताप ने अपने बन्धुओं की उपस्थिति में 29 जनवरी, 1597 ई. को अपने प्राण त्यागे। उनका जीवन व उनके वीरता, साहस व शौर्य पूर्ण कार्य भावी पीढ़ी की धरोहर बन गये। उन्होंने देश भक्ति की जो मिसाल कायम की है, उसके लिए उनका नाम भारत के इतिहास में सदैव अमर रहेगा और लोग उनसे प्रेरणा लेते रहेंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती को महाराणा प्रताप के जीवन पर अपने उद्गार प्रकट करने का अवसर नहीं मिला। उनका यही सन्देश हमें ज्ञात होता है कि वेदों की विचारधारा से दूर जाने के कारण हमारा पतन हुआ, हम गुलाम हुए व नानाविध दुःख हमने सहन किए हैं। वैदिक शिक्षा के प्रचार, प्रसार, व आचरण से ही वह दुःख दूर किए जा सकते हैं व भविष्य में उनकी पुनरावृत्ति से बचा जा सकता है। हम समझते हैं कि महर्षि दयानन्द महाराणा प्रताप की स्वदेश–भक्ति, क्षात्रधर्म की रक्षा व पालन, उनके शौर्य, वीरता, त्याग व बलिदान की भावनाओं से प्रभावित थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन उदयपुर में किया। उदयपुर महाराणा प्रताप व उनके पूर्वजों की जन्म व कर्म भूमि रही है जो वीरता व देशभक्ति की प्रतीक है। महर्षि दयानन्द ने यहां अपनी सर्वप्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' की भूमिका लिख कर सत्यार्थ प्रकाश के लेखन कार्य को समाप्त किया। सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका की समाप्ति पर उन्होंने अपने हस्ताक्षर के साथ लिखा, **"स्थान महाराणा जी का उदयपुर, भाद्रपद, शुक्ल पक्ष संवत् 1939"।** हम समझते हैं कि यह महाराणा शब्द का उल्लेख उन्होंने महाराणा प्रताप जी के यश व कीर्ति कारण उनसे प्रभावित व उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि के कारण लिखा। **यह सौभाग्य की बात है महाराणा प्रताप के वंशज महाराणा सज्जन सिंह उनके सर्वप्रिय शिष्यों में से एक रहे। स्वामीजी का उन पर पूर्ण विश्वास था। वह उन्हें संस्कृत व राजनीति का अध्ययन कराते थे। उन्होंने अपने इच्छा पत्र "स्वीकार पत्र" का भी उदयपुर में ही पंजीकरण कराया था। आपने अपने सर्वस्व की अधिकारिणी जिस परोपकारिणी सभा का गठन किया था। उसके प्रधान–अध्यक्ष महाराणा सज्जन सिंह ही को बनाया गया और मंत्री के लिए भी उदयपुर रियासत के मंत्री श्री कविराजा श्यामल दास जी को मनोनीत किया। अतः स्वामीजी की महाराणा प्रताप के प्रति पूर्ण श्रद्धा थी, ऐसा अनुमान होता है।**

मातृभमि से प्रेम व उसकी रक्षा के लिए स्वयं को समर्पित रखना महाराणा प्रताप के जीवन का सन्देश था। यदि देश की रक्षा के लिए अपने प्राण भी देने पड़े तो उसके लिए सदैव तत्वर रहना, अपनी सत्य परम्पराओं का पालन करना। विदेशी राजा चाहे कितना भी बलवान, शक्तिशाली, नीति–निपुण, पराक्रमी, धनी व सामर्थ्यवान ही क्यों न हो, उसकी परवाह न कर अपनी शक्ति को बढ़ाना और उसके आधार पर शत्रु को अधिक से अधिक क्षति पहुंचाना और युद्ध करते हुए अपने प्राणों को स्वदेश की पवित्र वेदी पर न्योछावर करना। देश के गौरव, स्वदेश भक्ति, स्वधर्म व प्राचीन वैदिक परम्पराओं की रक्षा के अदम्य उदाहारण व प्रेरणा स्रोत, देश के लिए अपना सब कुछ त्याग देने की भावना व जज्बा रखने वाले नर पुंगव वीरता, शौर्य व साहस की अनोखी की मिसाल **महाराणा प्रताप जी** को हमारी श्रद्धांजली।

पताः 196 चुक्खूवाला ब्लाक 2
देहरादून–248001
मोबाइलः 09412985121

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 16-17/7/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

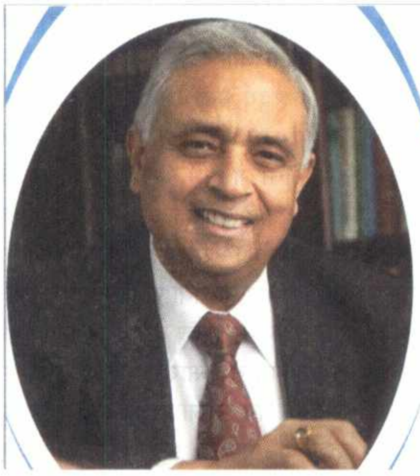

Arya Ratna Sh. Punam Suri
President, DAV CMC, New Delhi
Chairman LMC

DAV PUBLIC SCHOOL
Lawrence Road
Amritsar- 143001

The School falls in
Very Good' Category'
according to the
Qualitative Performance Index
of DAV CMC New Delhi

ओ३म्

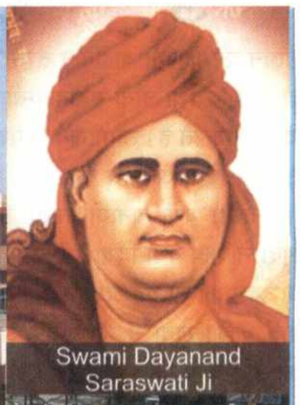

The school has been accredited with the British Council International School Award for three year i.e. From 2013-2015

Principal Dr. Mrs. Neera Sharma received CBSE National Award for best Teacher by Smt. D. Purandeswari Hon'ble Minister of the State HRD, Govt. Of India.

Sh. Ravindra Kumar
Secretary, DAV CMC, New Delhi. Vice-Chairman, DAV Public School, Amritsar

Sh. J.P. Shoor
Director, PS-I, Aided Schools, DAV CMC, New Delhi

Dr. Mrs. Neelam Kamra
Principal, BBK DAV College for Women, Amritsar
Regional Director, Asr Zone

Dr. Sh. K.N. Kaul
Principal, DAV College Amritsar, Manager LMC

Dr.Mrs. Neera Sharma
Principal

TOPPERS OF CLASS XII

District Topper in Science Stream

Saksham Sharma 97.6% (Science)

Jyotsna Mehra 97.6% (Arts)

Shruti Dhawan 96.2% (Commerce)

TOTAL APPEARED = 412

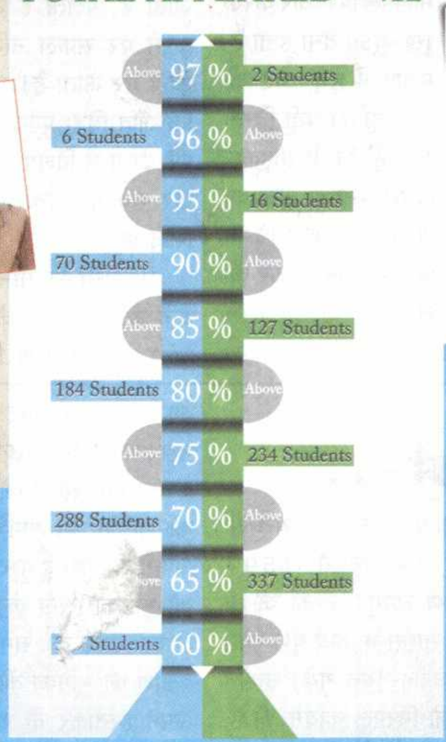

DAV PUBLIC SCHOOL, AMRITSAR

CBSE RESULT-2013 CLASS-XII

Amrinder Singh
96.2%
Science

Parth Mehra
96%
Science

Kanav Mahajan
96%
Commerce

JEE Advanced 2014

Sr.no.	Name	All India Rank
1.	Saksham Sharma	138
2.	Archit Sharma	376
3.	Amrinder Singh Dhaliwal	786
4.	Puneet Duggal	3851
5.	Sarthak Chaudhary	5700
6.	Parth Mehra	14922

X CLASS TOPPERS

CLASS X CGPA10

70 STUDENTS

PNET 25 STUDENTS

DAV PUBLIC SCHOOL, AMRITSAR TOPPER'S XII'2014

Science

Saksham Sharma
97.6

Amrinder Singh Dhaliwal
96.2

Parth Mehra
96

Commerce

Shruti Dhawan
96.2%

Kanav Mahajan
96

Malvika Talwar
95.6

Sanyam Aggarwal
95.6

Arts

Jyotsna Mehra
97.6

Akriti Sharma
95.8

Mehar Sandhu
95

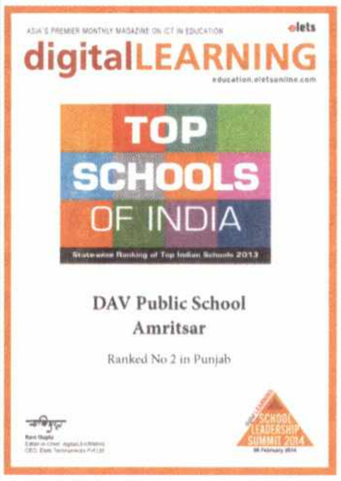

School Honours

- The school has been Ranked no2 in Punjab in the State wise ranking of Top Indian Schools 2013
- The school has been adjudged as the Best Performing School at the national Level by Camlin
- The school won the world's Children's Prize for the Rights of the child
- The school has been affiliated to National Progressive school Confrence, a prestigious chain of progressive school in India

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**